हरिभूमि
जीटी रोड भूमि
रोहतक, रविवार 11 अक्टूबर 2026

तापमान

अधिकतम 34.7 डिग्री से.
न्यूनतम 20.5 डिग्री से.

10 सीजेपी के आंदोलन की वजह से दिल्ली जाने वाली ...



10 मेगा मेडिकल चेकअप कैंप में 650 लोगों ने करवाई ...



खबर संक्षेप



इंद्री में 32.21 ग्राम स्मैक सहित युवक गिरफ्तार

करनाल। जिला पुलिस ने नशा तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए इंद्री क्षेत्र से विजय पुत्र राजेश कुमार, निवासी वार्ड नंबर-4 को 32.21 ग्राम स्मैक सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए-2 प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार के नेतृत्व में टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर दबिश देकर आरोपी को पकड़ा। पुलिस के अनुसार, आरोपी के खिलाफ पहले से तीन से चार आपराधिक मामले दर्ज हैं। पुलिस ने आरोपी को न्यायालय में पेश कर रिमांड हासिल किया है। पूछताछ के दौरान नशा तस्करी से जुड़े अन्य लोगों के बारे में जानकारी जुटाई जाएगी।

पानीपत में पेरलल नहर में डूबी महिला

पानीपत। पानीपत के देशवाल चौक के पास दिल्ली पेरलल नहर में डूबने से 45 वर्षीय पुष्पा लता निवासी जाटल रोड, पीपल वाली गली की मौत हो गई। पुष्पा हर रोज की तरह नहर में मछलियों को आटा डालने गई थी। वहीं, पुष्पा के पति की पहले ही मौत हो चुकी है। हालांकि दो लोगों ने पुष्पा को बचाने का प्रयास किया था। इधर, पुलिस ने पुष्पा की मौत के मामले की जांच शुरू कर दी है।

त्यागी हत्याकांड में तीन और आरोपी गिरफ्तार

यमुनानगर। शिवा त्यागी की पीट-पीटकर हत्या के मामले में अपराध अन्वेषण शाखा-1 ने तीन और आरोपियों सत्यम, लक्ष्य व कनिष्क को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने तीनों को अदालत में पेश कर रिमांड पर लिया है। मामले में अब तक छह आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं। पहले खेड़ा फार्म निवासी राजकुमार उर्फ लुक्का, आशीष और अंकित को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है।

नागल पत्ती में हेरोइन सहित तस्कर गिरफ्तार

यमुनानगर। एंटी नारकोटिक सेल की टीम ने गांव नागल पत्ती के पास से 32 ग्राम हेरोइन सहित सलीम को गिरफ्तार किया है। आरोपी इसी गांव का निवासी है। पुलिस को सूचना मिली थी कि एक युवक नशीले पदार्थ लेकर घूम रहा है। टीम ने युवक को पकड़ा और तलाशी में हेरोइन बरामद की। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर उसे अदालत में पेश किया, जहां से रिमांड मिला। आरोपी हेरोइन कहां से लाया था और किसे सप्लाई करने वाला था।

कुरुक्षेत्र में मुख्यमंत्री आवास घेरने पहुंचे थे प्रदेशभर से अतिथि अध्यापक

नियमितीकरण की मांग को लेकर अतिथि अध्यापकों का प्रदर्शन, वाटर कैनन से रोका

- 23 जून से जारी है अनिश्चितकालीन धरना, तीन बार प्रदर्शन के बावजूद समाधान नहीं होने ने रोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र

अतिथि अध्यापकों को नियमित करने की मांग को लेकर शनिवार को कुरुक्षेत्र में प्रदेशभर से पहुंचे अतिथि अध्यापकों ने प्रदर्शन किया। लघु सचिवालय पर एकत्रित होने के बाद दोपहर को शिक्षक पैदल मुख्यमंत्री आवास की ओर कूच करने लगे। जिंदल चौक, सेक्टर-3 पर पुलिस ने बैरिकेडिंग कर उन्हें रोक लिया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेडिंग पार करने का प्रयास किया, जिसके बाद पुलिस ने भीड़ को रोकने के लिए वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। इस दौरान कई अतिथि अध्यापक चोटिल भी हुए। प्रदर्शन को देखते हुए जिंदल चौक पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। मौके पर वाटर कैनन वाहन भी मौजूद रहा। मुख्यमंत्री आवास की ओर जाने से रोके जाने पर प्रदर्शनकारी शिक्षकों ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और नियमित करने की मांग दोहराई। शिक्षकों ने 'गेस्ट टीचर को नियमित करो' और 'कोर्ट का फैसला लागू करो' जैसे नारे लगाए।शिक्षकों के अनुसार, 16 अप्रैल 2026 को सुप्रीम कोर्ट के फैसले तथा 29 अप्रैल और 27 मई 2026 को पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के आदेशों के बावजूद अभी तक किसी अतिथि अध्यापक को नियमित नहीं किया गया है। उन्होंने बताया कि इसी मांग को लेकर 23 जून 2026 से लघु सचिवालय में अनिश्चितकालीन पड़ाव शुरू किया गया था।महेश तेवतिया और राजकुमार कालीरमन ने कहा कि संगठन के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट के फैसले में हरियाणा सरकार की 16 और 18 जून 2014 की नियमितीकरण नीतियों को वैध माना गया है। उनका दावा है कि 29 अप्रैल और 27 मई को हाईकोर्ट ने भी अतिथि अध्यापकों के नियमितीकरण के पक्ष में आदेश पारित किए। उन्होंने कहा कि प्रदेश के स्कूलों में कार्यरत अतिथि अध्यापक इन नीतियों के तहत नियमितीकरण की शर्तें पूरी करते हैं। संगठन ने सरकार से सभी पात्र अतिथि अध्यापकों को तत्काल नियमित करने और जून 2014 से सभी संबंधित लाभ देने की मांग की।गेस्ट टीचर भूपेंद्र सिंह ने कहा कि अप्रैल 2026 में अतिथि अध्यापकों से जुड़े मामले में अदालत का फैसला आया था। इसके बाद 23 जून से कुरुक्षेत्र में धरना जारी है।



कुरुक्षेत्र। अतिथि अध्यापकों पर वाटर कैनन की बौछार करते कर्मी। फोटो : हरिभूमि

ज्ञापन में उठाईं तीन मांगें

राजकीय अनुबंधित अध्यापक संघ की हरियाणा राज्य कमेटी की ओर से मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन जारी किया गया। इसमें सर्वोच्च न्यायालय के 16 अप्रैल 2026 के फैसले और मुख्य सचिव, हरियाणा के 11 अगस्त 2026 के पत्र का हवाला देते हुए पात्र अतिथि अध्यापकों को नियमित करने की मांग उठाई गई है। ज्ञापन में 16 जून और 18 जून 2014 की नीति के तहत पात्र अतिथि अध्यापकों की सेवाएं नियमित करने की प्रक्रिया शुरू करने की मांग की गई है। इसके अलावा 23 अगस्त 2010 से पहले नियुक्त शिक्षकों को टीईटी की अनिवार्यता से राहत देने तथा स्कूलों का मर्जर बंद कर जरूरत के अनुसार शहरी बस्तियों में नए स्कूल खोलने की मांग भी शामिल है। प्रदर्शनकारी शिक्षकों ने सरकार से अदालत के फैसले के अनुरूप कार्रवाई करने और नियमितीकरण की प्रक्रिया जल्द शुरू करने की अपील की।

कुरुक्षेत्रः नहर से मिले युवती के शव का मामला

मुंह-नाक दबाकर हत्या, सिर पर भी मिले चोट के निशान

- यौन उत्पीड़न की पुष्टि के लिए सैंपल फॉरेंसिक लैब भेजे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र

झांसा हेड के पास नरवाना ब्रांच नहर से मिले अर्धनग्न युवती के शव के मामले में पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हत्या किए जाने की बात सामने आई है। चिकित्सकों के अनुसार, युवती की मौत नहर में डूबने से नहीं, बल्कि मुंह और नाक दबाने से हुई। उसके सिर पर भी चोटों के निशान मिले हैं। आशंका है कि हत्या के बाद शव को नहर में फेंका गया। वहीं, युवती के साथ यौन उत्पीड़न हुआ था या नहीं, इसकी पुष्टि के लिए सैंपल पंचकूला स्थित फॉरेंसिक लैब भेजे गए हैं। 16 सितंबर को नहर से शव मिलने के 24 दिन बाद भी मृतका की पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस डीएनए जांच और आसपास के जिलों के साथ पंजाब पुलिस के रिकॉर्ड की मदद से उसकी पहचान करने का प्रयास कर रही है। पहचान नहीं होने के कारण पोस्टमार्टम के बाद एक सामाजिक संस्था के सहयोग से युवती का अंतिम संस्कार कर दिया गया। 16 सितंबर की सुबह करीब 11 बजे झांसा हेड के पास नहर में एक युवती का शव पानी में फंसा मिला था। गोताखोर प्रगट सिंह की टीम ने शव को बाहर निकलवाया। युवती की उम्र करीब 28 से 30 वर्ष आंकी गई थी। उसने काले रंग की जींस जैसी लोअर पहनी हुई थी।



डीएनए जांच से पहचान की उम्मीद

मृतका की पहचान के लिए पोस्टमार्टम के दौरान दांत का सैंपल डीएनए जांच के लिए सुरक्षित रखा गया है। पुलिस आसपास के जिलों के थानों से संपर्क कर रही है और पंजाब पुलिस से भी लापता महिलाओं का रिकॉर्ड मांगा गया है। पुलिस को उम्मीद है कि लापता महिलाओं के रिकॉर्ड और डीएनए मिलान के जरिए मृतका की पहचान करने में मदद मिल सकती है।

मोबाइल लूटने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| अंबाला



सीआईए-2 की टीम ने गांव मलिकपुर में मोबाइल लूट की वारदात सुलझाते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान थंबड़ गांव निवासी सागर और अमित सिंह उर्फ बल्लू के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, 1 सितंबर 2026 को नीरज का मोबाइल फोन मोटरसाइकिल सवार दो युवक लूटकर फरार हो गए थे। थाना बराड़ा में केस दर्ज कर जांच सीआईए-2 को सौंपी गई। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर लूटा गया मोबाइल और वारदात में इस्तेमाल मोटरसाइकिल बरामद कर ली। पूछताछ के बाद दोनों को जेल भेज दिया गया।

एनसीआर प्रदूषण स्रोतों की पहचान करेगी विशेषज्ञ कमेटी

- कमेटी हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रदूषण के कारणों की पहचान करेगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| पानीपत

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते वायु प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने 15 सदस्यीय उच्चस्तरीय विशेषज्ञ सब-कमेटी का गठन किया है। नौ अक्टूबर को जारी आदेश के अनुसार, यह कमेटी हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों की पहचान करेगी। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग अधिनियम, 2021 की धारा 11(5) के तहत गठित कमेटी की अध्यक्षता सीएक्यूएम के टेक्निकल मेंबर डॉ. एसडी अत्री करेंगे। इसमें आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर मुकेश शर्मा, आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर साग्निक डे, पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ के प्रोफेसर रविंद्र खैवाल और सीएसआईआर-नीरी के डॉ. एसके गोयल सहित विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल हैं। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और चारों राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों के सदस्य सचिव भी कमेटी का हिस्सा होंगे। डॉ. विकास सिंह को सदस्य-संयोजक नियुक्त किया गया है। कमेटी सीमावर्ती क्षेत्रों में औद्योगिक, कृषि और अन्य प्रदूषणकारी गतिविधियों का अध्ययन कर रिपोर्ट दो महीने में आयोग को सौंपेगी।

अंबाला में दिल्ली-अमृतसर हाइवे पर हादसा

पिकअप से टकराया कैंटर बस भी भिड़ी, ड्राइवर घायल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| अंबाला



अंबाला कैंट में दिल्ली-अमृतसर नेशनल हाइवे पर शहीदी स्मारक के पास शनिवार को कैंटर और प्राइवेट बस की टक्कर हो गई। हादसे में कैंटर ड्राइवर घायल हो गया, जबकि बस में सवार कुछ यात्रियों को भी चोटें आने की बात सामने आई है। दुर्घटना के बाद हाईवे पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और यातायात प्रभावित हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस की पीसीआर टीम मौके पर पहुंची। घायल कैंटर ड्राइवर को एम्बुलेंस की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया। वहीं, क्रेन बुलाकर दुर्घटनाग्रस्त बस और कैंटर को सड़क से हटाया गया, जिसके बाद यातायात दोबारा सुचारू हो सका। बस ड्राइवर रईस अहमद ने बताया कि वह चंडीगढ़ की तरफ से बस लेकर आ रहा था। आगे कैंटर चल रहा था। कैंटर ने सड़क पर खड़ी पिकअप गाड़ी को टक्कर मार दी, जिसके बाद कैंटर अनियंत्रित होकर पलट गया। बस भी उसके पीछे चल रही थी। कैंटर से बस को बचाने के लिए काफी कोशिश की और ब्रेक लगाकर वाहन को नियंत्रित करने का प्रयास किया, लेकिन वह टक्कर से बच नहीं सका। दूसरी तरफ भी वाहन चल रहे थे।

जमीन के सौदे में 85 लाख हड़पने का आरोप

शहजादपुर। 39 कैनाल जमीन का सौदा कर 85 लाख रुपये हड़पने और गैंगस्टर से जान से मरवाने की धमकी दिलवाने के आरोप में पुलिस ने एक ही परिवार के चार सदस्यों पर धोखाधड़ी और आपराधिक साजिश का केस दर्ज किया है। डीएसपी की जांच के बाद कार्रवाई हुई। आरोपियों में जटवाड़ निवासी गुरनाम सिंह, उसकी पत्नी सतवंती देवी और बेटे नरेंद्र सिंह व बलजिंद्र सिंह शामिल हैं। शिकायतकर्ता विकास गुप्ता के अनुसार, जमीन की रजिस्ट्री नहीं कराई गई और पैसे लौटाने से भी इनकार कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

- परिवार के चार सदस्यों पर पर धोखाधड़ी और आपराधिक साजिश का केस

मां दुर्गा के गज पर आगमन को शुभ संकेत माना जा रहा

नवरात्र के हर दिन बनेंगे विशेष योग, दो दिन सप्तमी, 19 को अष्टमी-नवमी का महासंयोग

- आज से नवरात्र, 14 अक्टूबर को सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि और रवि योग का त्रिवेणी संयोग, 20 को मनेगा दशहरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र



शक्ति आराधना का महापर्व शारदीय नवरात्र इस बार कई विशेष ज्योतिषीय संयोगों के साथ शुरू होगा। 11 अक्टूबर से शुरू होकर 19 अक्टूबर तक चलने वाले नवरात्र में लगभग हर दिन अलग-अलग योग बनेंगे। तिथियों की स्थिति भी इस बार खास है। 17 और 18 अक्टूबर को सप्तमी तिथि रहेगी, जबकि 19 अक्टूबर को अष्टमी और नवमी दोनों तिथियों का संयोग बनेगा। 20 अक्टूबर को विजयादशमी मनाई जाएगी। गायत्री ज्योतिष अनुसंधान केंद्र, ब्रह्मसरोवर के संचालक डॉ. रामराज कौशिक के अनुसार ज्योतिषीय गणना में नवरात्र के दौरान गुरु और चंद्रमा की विशेष स्थिति से गजकेसरी योग बनने का संयोग है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गजकेसरी योग को शुभता, प्रतिष्ठा, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा से जोड़ा जाता है। नवरात्र के पहले दिन 11 अक्टूबर को प्रतिपदा तिथि के साथ वैधृति योग और चित्रा नक्षत्र का प्रभाव रहेगा। इसी दिन विधि-विधान से घटस्थापना कर मां दुर्गा के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री की पूजा की जाएगी। श्रद्धालु नौ दिनों तक मां के नौ स्वरूपों की आराधना करेंगे। इस दौरान व्रत, दुर्गा सप्तशती पाठ, हवन और कन्या पूजन सहित विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान होंगे।

मुर्गे पर प्रस्थान शुभ नहीं



गायत्री ज्योतिष अनुसंधान केंद्र, ब्रह्मसरोवर के संचालक डॉ. रामराज कौशिक।

डॉ. कौशिक के अनुसार इस बार नवरात्र में मां दुर्गा के हाथी पर आगमन की धार्मिक मान्यता है। परंपरा में हाथी को शक्ति, स्थिरता, समृद्धि और वर्षा का प्रतीक माना गया है। देवी के गज पर आगमन को शुभ संकेत के रूप में देखा जाता है तथा इसे अच्छी वर्षा, कृषि उपज और समृद्धि से जोड़ा जाता है। वहीं देवी के मुर्गे पर प्रस्थान को परंपरागत ज्योतिषीय मान्यताओं में शुभ नहीं माना जाता। ऐसी मान्यताओं में इसे राजनीतिक अस्थिरता, संक्रमण अथवा विपरीत परिस्थितियों के संकेत से जोड़ा जाता है। हालांकि ये धार्मिक एवं ज्योतिषीय मान्यताएं हैं, जिन्हें आस्था और परंपरा के संदर्भ में देखा जाता है।

घटस्थापना के शुभ मुहूर्त

▶▶| प्रातःकाल : सुबह 6:19 से 10:12 बजे तक
▶▶| अभिजीत मुहूर्त : सुबह 11:44 से दोपहर 12:31 बजे तक

12 को विष्कंभ 13 को प्रीति

नवरात्र के दौरान 14 अक्टूबर का दिन विशेष माना जा रहा है। इस दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग और रवि योग का संयोग रहेगा। इसके अलावा 12 अक्टूबर को विष्कंभ, 13 को प्रीति, 14 को आयुष्मान, 15 को सौभाग्य और 16 अक्टूबर को शोभन योग रहेगा। 17 अक्टूबर को अतिगंड योग के बाद सुकर्मा योग तथा 18 अक्टूबर को सुकर्मा योग का प्रभाव रहेगा।





मतदाताओं से संबंधित कार्यों में लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्तः बांगड़

यमुनानगर। मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य के तहत एआईआरओ एवं जिला परिषद के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी जसविंदर बागड़ ने बूथ नंबर 154, 155 और 138 का फील्ड विजिट कर निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बूथों पर चल रहे कार्यों का जायजा लिया तथा संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आवश्यक जानकारी प्राप्त की। एआईआरओ एवं जिला परिषद के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी जसविंदर बांगड़ ने निरीक्षण के दौरान मतदाता सूची से संबंधित कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची से जुड़े कार्यों को गंभीरता एवं जिम्मेदारी के साथ पूरा किया जाए। ताकि पात्र नागरिकों के नाम मतदाता सूची में शामिल हों और निर्वाचन प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे। उन्होंने संबंधित कर्मचारियों को निर्देश दिए कि मतदाताओं से संबंधित कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए तथा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार सभी आवश्यक कार्य समय पर पूरे किए जाएं।

अनाज मंडी छछरौली में खरीद एजेंसियों, एमएलसी व आढ़तियों की हुई बैठक

अनाज मंडी में खरीदे गए धान का नियमित करें उठान : गिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| यमुनानगर

धान खरीद प्रक्रिया को सुचारु रुप से संचालित करने को लेकर अनाज मंडी छछरौली के मार्केट कार्यालय में खरीद एजेंसियों, एमएलसी, राइस मिलस और आढ़तियों की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता एसडीएम छछरौली जसपाल सिंह गिल ने की। उन्होंने धान खरीद में तेजी लाने और उठान सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक के दौरान एसडीएम जसपाल सिंह गिल ने छछरौली अनाज मंडी में चल रही धान खरीद व्यवस्था पर संतुष्टि व्यक्त की और संबंधित अधिकारियों एवं खरीद एजेंसियों को निर्देश दिए कि किसानों की फसल की खरीद निर्धारित नियमों के अनुसार समयबद्ध तरीके से सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि मंडी में अपनी फसल लेकर आने वाले किसानों को किसी प्रकार की अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े तथा खरीद प्रक्रिया में आपसी तालमेल बनाए रखते हुए कार्य किया जाए।

एसडीएम छछरौली जसपाल सिंह गिल ने संबंधित एजेंसियों, राइस मिलर्स एवं अन्य अधिकारियों को निर्देश दिए कि खरीदी गई धान का उठान नियमित रूप से किया जाए। ताकि मंडी में फसल जमा होने के कारण किसानों और आढ़तियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

उन्होंने कहा कि खरीद और उठान की प्रक्रिया में बेहतर समन्वय बनाए रखना बेहद जरूरी है। जिससे मंडी में व्यवस्था सुचारू बनी रहे। उन्होंने कहा कि किसानों की मेहनत से तैयार हुई फसल की खरीद, उठान एवं अन्य संबंधित कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए।



यमुनानगर। छछरौली अनाज मंडी के मार्केट कमेटी के कार्यालय में बैठक में दिशा निर्देश देते एसडीएम छछरौली जसपाल सिंह गिल। **फोटो : हरिभूमि**

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर मार्केट कमेटी चेयरमैन कैलाश चंद शर्मा,वाइस चेयरमैन योगेश अग्रवाल , मार्केट कमेटी सचिव अनिल पुरुषार्थी ,भाजपा जिला यमुनानगर मीडिया प्रभारी कपिल मनीष गर्ग, वेयरहाउस डीएम पीके गुप्ता, फुड सप्लाई इंस्पेक्टर सुखचैन, हैफेड इंस्पेक्टर नरेश सिहाग व मंडी सुपरवाइजर धीरज अग्रवाल आदि मौजूद रहे।

नमी के नाम पर किसानों का किया जा रहा शोषणः सुरजेवाला



यमुनानगर। कांग्रेस के कैथल से विधायक आदित्य सुरजेवाला ने पार्टी नेताओं के साथ शनिवार को जगाधरी व रादौर अनाज मंडियों में दौरा कर धान खरीद प्रक्रिया का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने किसानों व आढ़तियों की समस्याएं भी सुनी। उन्होंने जगाधरी की अनाज मंडी में धान खरीद की बदहाली व्यवस्था का आरोप लगाया। विधायक आदित्य सुरजेवाला ने कहा कि यमुनानगर जिले में अब तक 1 लाख 12 हजार टन धान की आवक हुई है। इसमें से 66 हजार टन की खरीद हुई है। लेकिन उठान महज 7 हजार टन ही हो सका है। विधायक आदित्य सुरजेवाला ने कहा कि एक ही धान की नमी आढ़ती और मार्केट कमेटी की मशीनों में अलग अलग बताई जा रही है। जिससे हर बार नुकसान किसान को हो रहा है। मुख्यमंत्री के वीडियो कॉन्फ्रेंस में 17 प्रतिशत नमी वाले धान की खरीद का निर्देश आया था। लेकिन इससे पहले इसे स्वीकार नहीं किया जा रहा था। नमी के नाम पर 250 रुपये प्रति क्विंटल तक कटौती की जा रही है। मौके पर कांग्रेस के जिला अध्यक्ष दविंदर सिंह, वरिष्ठ नेता सतीश तेजली, जगबीर सिंह रुलाखेड़ी, रविन्द्र सिंह, बबलू, सतपाल कौशिक, ठाठ सिंह राणा व कांग्रेस किसान सेल के जिला अध्यक्ष ईश्वर नैन, बलवान सिंह, शिव कुमार संधाला, प्रदीप जयराम पुर, पवन वालिया, मुकेश कुशवाहा, सुरिंदर तेजली, सुरिंदर मलिक , विक्रांत ससौली, मुकेश भगत व अंकित पैंजेटा आदि मौजूद रहे।



सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का बेहतरीन मंचः संधावा

यमुनानगर। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गांव बक्करवाला में खंडस्तरीय सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रुप में समग्र शिक्षा अभियान के जिला परियोजना अधिकारी केएस संधावा ने भाग लिया। विद्यालय के प्रिंसीपल व स्टाफ सदस्यों ने मुख्यातिथि का फूलमालाएं पहनाकर व पुस्तक भेंटकर स्वागत किया। कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने गिद्दा, रागनी, हरियाणवी गीत, स्किट समेत विभिन्न सांस्कृतिक विधाओं में अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। मुख्यातिथि एवं समग्र शिक्षा विभाग के जिला परियोजना अधिकारी केएस संधावा ने कहा कि कल्चरल फेस्ट विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और उसे निखारने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करते हैं। इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, अनुशासन एवं मंच पर प्रस्तुति देने की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खंड एवं जिला स्तर पर आयोजित होने वाले ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने से विद्यार्थियों को अपनी कमियों को दूर करने, अनुभव प्राप्त करने और भविष्य में बेहतर कलाकार के रूप में उभरने का अवसर मिलता है। इस अवसर पर विद्यालय पहुंचने पर प्रिंसिपल मधुकर, खंड शिक्षा अधिकारी अशोक धीमान, सेवा सिंह व ममता धीमान आदि मौजूद रहे।

ट्विन सिटी में अपनाया जाएगा मध्य प्रदेश के इंदौर का स्वच्छता मॉडल

- मेयर सुमन बहमनी व निगमायुक्त महाबीर प्रसाद के नेतृत्व में 35 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल इंदौर के लिए हुआ रवाना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| यमुनानगर

ट्विन सिटी की स्वच्छता व्यवस्था को और बेहतर बनाने तथा सफाई प्रबंधन में नए उपाय अपनाने के उद्देश्य से नगर निगम मेयर सुमन बहमनी और निगम आयुक्त महाबीर प्रसाद के नेतृत्व में 35 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल इंदौर के लिए रवाना हुआ। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य मेयर व निगमायुक्त के नेतृत्व में इंदौर में स्वच्छता व्यवस्था का अध्ययन करेंगे और वहां अपनाए जा रहे तरीकों की जानकारी लेकर यमुनानगर में उन्हें लागू करने की संभावनाओं पर काम करेंगे।



यमुनानगर। निगमायुक्त महाबीर प्रसाद व मेयर सुमन बहमनी के नेतृत्व में इंदौर के लिए रवाना होता प्रतिनिधिमंडल।

मेयर सुमन बहमनी और निगम आयुक्त महाबीर प्रसाद ने बताया कि प्रतिनिधिमंडल इंदौर में सफाई व्यवस्था, कचरा प्रबंधन, जनभागीदारी, जागरूकता अभियानों और सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट सहित स्वच्छता से जुड़ी व्यवस्थाओं का अध्ययन करेगा। इसका उद्देश्य यह समझना है कि इंदौर ने स्वच्छता को केवल सरकारी व्यवस्था तक सीमित रखने के बजाय जनभागीदारी का अभियान किस तरह बनाया और सफाई व्यवस्था को लगातार बनाए रखने के लिए कौन.से तरीके अपनाए हैं। उन्होंने बताया कि अध्ययन के दौरान संबंधित अधिकारियों और संस्थाओं के प्रतिनिधियों से संवाद कर वहां की कार्यप्रणाली की जानकारी भी जुटाई जाएगी। प्रतिनिधिमंडल अपनी यात्रा के बाद विस्तृत रिपोर्ट तैयार करेगा। इसमें इंदौर में अपनाए जा रहे उन उपायों का उल्लेख किया जाएगा।

जिन्हें यमुनानगर जगाधरी सहित अन्य शहरों में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार लागू किया जा सकता है। मेयर सुमन बहमनी और निगम आयुक्त महाबीर प्रसाद इस अध्ययन से प्राप्त जानकारी के आधार पर नगर निगम की मौजूदा स्वच्छता व्यवस्था को और प्रभावी बनाने की संभावनाओं पर विचार करेंगे। खास तौर पर कचरे के बेहतर प्रबंधन, नागरिकों की भागीदारी बढ़ाने, स्वच्छता के प्रति जागरूकता विकसित करने और व्यवस्थाओं को नियमित रूप से बनाए रखने जैसे विषयों पर ध्यान दिया जाएगा।

शारदीय नवरात्र के लिए सजे मां के मंदिर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| यमुनानगर

आदि शक्ति मां दुर्गा के शरदीय नवरात्र के अवसर पर जिले भर में माता के मंदिरों को आकर्षक रूप से सजा दिया गया है। वहीं, नवरात्र की पूर्व संध्या पर शनिवार को श्रद्धालुओं ने मां की पूजा अर्चना के लिए नारियल व पूजा का सामान खरीदा। इस दौरान दिन भर दुकानों पर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रही। वहीं नवरात्र को देखते हुए फलों के दाम भी बीस से तीस प्रतिशत महंगे हो गए हैं। ट्विन सिटी स्थित जगाधरी के काली माता मंदिर, आदिबद्री स्थित माता मंत्रा देवी मंदिर, देवी भवन मंदिर, जंगलावाली माता मंदिर, न्यू मार्किट मंदिर, त्रिलोकपुर मंदिरों को नवरात्र के लिए विशेष रूप से सजाया गया है। उधर, यमुनानगर की सीमा स्थित त्रिलोकपुर में नवरात्र के अवसर पर आयोजित होने वाले मेले का रविवार को शुभारंभ किया जाएगा। नवरात्र के अवसर पर शहर में फूलों की दुकानों को भी आकर्षक रूप से सजा दिया गया है। फ्लावर केंद्र के संचालक मोहित व संजय ने बताया कि नवरात्र में फूलों की मांग कई गुणा बढ़ जाती है।

पूजा सामग्री की बढ़ी कीमत

नवरात्र की पूर्व संध्या पर बाजार में सामान खरीदने पहुंचे श्रद्धालु विशाल, विक्की, बालेश, सोनिया, नंदिनी, महिमा, कमलेश, आरती, मोहित, श्याम सुंदर, विक्रांत सिंह, अखिलेश शर्मा व जयबीर आदि ने बताया कि वह हर नवरात्र में व्रत रखते हैं। लेकिन इस बार पूजा सामग्री के दाम बढ़ गए हैं। जिससे नवरात्र के अवसर पर श्रद्धालुओं को महंगाई की मार झेलनी पड़ेगी।



यमुनानगर। नवरात्र के पूर्व संध्या पर शनिवार को दुकानों पर खरीददारी करते श्रद्धालु। **फोटो : हरिभूमि**

ग्रामीण रामा ड्रामेटिक क्लब नाचरौन में सीता स्वयंवर का मंचन

प्रभु श्रीराम ने तोड़ा धनुष, माता सीता ने पहनाई वरमाला

जिला परिषद के वाइस चेयरमैन अग्नि विजय ने मुख्यातिथि के रूप में लिया भाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रादौर

ग्रामीण रामा ड्रामेटिक क्लब नाचरौन के तत्वावधान में चल रही चौदह दिवसीय श्रीरामलीला में तीसरे दिन सीता स्वयंवर का मंचन किया गया। इस दौरान मुख्यातिथि के रुप में जिला परिषद के वाइस चेयरमैन अग्नि विजय सिंह ने भाग लिया। उन्होंने रिबन काटकर सीता स्वयंवर के दृश्य मंचन का शुभारंभ किया। क्लब के प्रधान डॉ. लाभ सिंह राणा व अन्य सदस्यों ने मुख्यातिथि के फुलमालाएं पहनाकर और स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया।

क्लब के निदेशक कोच चंद्रपाल राणा ने बताया कि सीता स्वयंवर के दृश्य मंचन में दिखाया गया कि महर्षि विश्वामित्र जी जनक के बुलावे पर राम व लक्ष्मण को साथ लेकर मिथिला पुरी जाते हैं। जहां पर राजा जनक ने स्वयंवर की पूरी व्यवस्था की हुई थी। स्वयंवर के लिए राजा जनक की शर्त थी कि जो भी वीर शिव के धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा। वहीं राजकुमारी सीता से विवाह करेगा। तभी सभा में उपस्थित सभी राजा व महाराजा धनुष को उठाने की भरपूर कौशिश करते हैं। लेकिन सभा में उपस्थित कोई भी राजा उस धनुष को हिला नहीं पाते हैं। तभी महाराजा रावण का आगमन होता है। जैसे ही महाराजा रावण धनुष की तरफ बढ़ता है तभी आकाशवाणी होती है। आकाशवाणी सुनकर महाराजा रावण तुरंत वापस लौट जाता है और यह प्रण करता है कि सीता को एक दिन अवश्य अपनी पटरानी बनाएगा।

यह सब देखकर राजा जनक के चेहरे पर निराशा छा जाती है। राजा जनक सभी क्षत्रिय राजाओं को उनकी वीरता के लिए धिकारते हैं। राजकुमार लक्ष्मण से यह सब नहीं सहा गया और वह राजा जनक को खरी खरी सुनाते है। तभी विश्वामित्र के कहने पर श्रीराम उठते हैं और धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा देते हैं। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने के कारण धनुष टूट जाता है। धनुष के टूटने की गर्जना सुनकर महर्षि परशुराम क्रोधित होकर सभा में पधारते है। जिससे सभी राजा डर जाते हैं। तभी महर्षि परशुराम व वीरवर लक्ष्मण के बीच काफी नोकझोंक होती है।



यमुनानगर। नाचरौन में रामलीला में मुख्यातिथि को सम्मानित करते आयोजक।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर क्लब के निदेष चंद्रपाल कोच, सेठपाल शर्मा, मुकेश जेलदार, राज शर्मा,राहुल पुंडीर, धर्मबीर, सोमनाथ, पवन सिंह, गोविंद, पवन शर्मा, संदीप, प्रदीप राणा व चंद्रपाल कश्यप आदि मौजूद रहे।

आधुनिक युग में भी श्रीरामलीला के प्रति बनी हुई है श्रद्धालुओं की आस्था



यमुनानगर। तकनीकी और आधुनिकता के युग में जहां व्यक्ति इतना व्यस्त हो चुका है कि उसके पास अपने स्वस्थ्य और परिवार की देखभाल के लिए भी समय नहीं है। ऐसे में आज भी रामलीलाओं का जादू श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। यही वजह है कि ट्विन सिटी समेत ग्रामीण इलाकों में अधिकांश स्थानों पर रामलीलाओं का आयोजन किया जा रहा है। जिनमें रोजाना हजारों की तादाद में श्रद्धालु पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। खास बात यह है कि आज भी रामलीलाओं को देखने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ कम नहीं हुई है। जिले में अधिकांश रामलीलाओं में भगवान राम, लक्ष्मण व सीता की भूमिका निभा रहे कलाकार आज भी राम बनवास का मंचन होने के बाद राजतिलक तक अन्न ग्रहण नहीं करके मात्र फल व कंदमूल ही ग्रहण करते हैं और भूमि पर सोते हैं। रामलीला में श्रीराम की भूमिका अदा कर रहे कलाकार सुमित व लक्ष्मण के पात्र बने विरेंद्र ने बताया कि वह पिछले दस वर्षों से भगवान श्रीराम की भूमिका निभा रहे हैं। वह रामलीला शुरू होने से लेकर संपन्न होने तक उपवास रखते हैं।

न्यूज डायरी



ऑनलाइन ठगी से बचाव के लिए किया जागरूक

रादौर। एमएलएन कालेज रादौर में शनिवार को ऑनलाइन साइबर क्राइम अवेयरनेस सेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा, ऑनलाइन धोखाधड़ी, साइबर खतरों तथा सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के बारे में जानकारी प्रदान की गई। कालेज की प्राचार्या डॉ. माला शर्मा ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विवेज के माध्यम से विद्यार्थियों को ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचने, ओटीपी एवं पासवर्ड की गोपनीयता बनाए रखने, संदिग्ध लिंक से सावधान रहने तथा साइबर अपराध होने पर उसकी शिकायत करने के तरीकों के बारे में जागरूक किया गया। मौके पर कंप्यूटर साइंस विभाग से प्रो. चेतना सिंह आदि मौजूद रहे।



बच्चों को अच्छे संस्कार देना परिवार की जिम्मेदारी

रादौर। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर शनिवार को दामला के कालेज में नशा मुक्ति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रुप में हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी उप निरीक्षक डॉ.अशोक कुमार वर्मा ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि नशा केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि मन, परिवार और समाज को भी प्रभावित करता है। नशे की लत मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षा, कार्यक्षमता और पारिवारिक सुख शांति के लिए गंभीर चुनौती है। उन्होंने कहा कि बच्चों को अच्छे संस्कार देना परिवार की जिम्मेदारी है।



शुरुआती 6 माह शिशु को दें केवल मां का दूध

यमुनानगर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) व्यासपुर में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत गर्भवती महिलाओं के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की अध्यक्षता वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. शमा परवीन ने की। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत प्रत्येक माह में 10, 23 और 30 तारीख को स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किए जाते हैं। शिविर के दौरान कुल 115 गर्भवती महिलाओं की जांच की गई तथा उनके निःशुल्क अल्ट्रासाउंड भी करवाए गए। डॉ. शमा परवीन ने जागरूकता सत्र के दौरान गर्भवती महिलाओं को नवजात शिशु के जन्म के पहले घंटे के भीतर स्तनपान शुरू करवाने के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जन्म के बाद शुरुआती छह महीने तक शिशु को केवल मां का दूध देना चाहिए।



कपालमोचन मेले के लिए किए जा रहे व्यापक प्रबंध

यमुनानगर। उत्तर भारत के प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक तीर्थ स्थल श्रीकपालमोचन में पांच दिवसीय मेला भव्य रुप से आयोजित किया जाएगा। मेले को भव्या रुप से आयोजित करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा युद्धस्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। मेला प्रशासक एवं व्यासपुर के एसडीएम डॉ. कुलदीप सिंह ने मेले में श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं सुविधाओं के व्यापक प्रबंध किए जाने का दावा जताया है। मेला प्रशासक एवं उपमंडल अधिकारी डॉ. कुलदीप सिंह ने बताया कि इस वर्ष श्री कपाल मोचन मेला 20 नवंबर से 24 नवंबर तक आयोजित किया जाएगा। मेले की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। मेला प्रशासक एवं एसडीएम डॉ. कुलदीप सिंह ने बताया कि सारा मेला क्षेत्र रोशनी से जगमग रहेगा। सभी सरोवरों पर स्थाई एलईडी लाइटें लगाई गई हैं। सरोवरों पर पर्याप्त रोशनी रहेगी।

हैप्पी कार्ड से पात्रों को दी जा रही परिवहन सुविधा



यमुनानगर। सेवा संकल्प अभियान के तहत हरियाणा रोडवेज के महाप्रबंधक यमुनानगर संजय रावल ने अपने कार्यालय में शनिवार को पात्र लाभार्थियों को हैप्पी कार्ड वितरित किए। महाप्रबंधक ने कहा कि हैप्पी कार्ड योजना का उद्देश्य पात्र परिवारों को सार्वजनिक परिवहन की सुविधा उपलब्ध करवाकर उनकी दैनिक यात्रा को सुगम बनाना है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा जरूरतमंद एवं पात्र परिवारों के हित में विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं। जिनका लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से सरकार की योजनाओं और सेवाओं का लाभ सीधे पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाया जा रहा है।



आर्यन मिस्टर फ्रेशर व लक्ष्मी बनी मिस फ्रेशर

रादौर। ग्लोबल रिसर्च ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस नाचरौन(रादौर) में कोफ्यूजन फिएस्टा थीम पर फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। फ्रेशर पार्टी का आयोजन नए विद्यार्थियों के स्वागत और उन्हें संस्थान के वातावरण से परिचित करवाने के उद्देश्य से किया गया। फ्रेशर पार्टी में संस्थान के चेयरमैन सीए एसके जिंदल ने मुख्यातिथि के रुप में भाग लिया। वहीं, विशिष्ठ अतिथि के रुप में संस्थान की वाइस चेयरमैन इंदु जिंदल मौजूद रही। कार्यक्रम का संचालन कॉर्डिनेटर फार्मेसी हेड डॉ. नेहा यादव ने की। मंच संचालन तवलीन कौर द्वारा किया गया। संस्थान समूह निदेशक डॉ. अश्विनी ढींगरा व निदेशक डॉक्टर लक्ष्य अग्रवाल द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। संस्थान निदेशक डॉ. लक्ष्य अग्रवाल ने बताया कि फ्रेशर्स पार्टी में विद्यार्थियों द्वारा की गई मॉडलिंग ने सबको हैरान कर दिया। मौके पर मिस्टर फ्रैशर व मिस फ्रैशर का चयन किया गया। जिसमें ग्रिम्ट कालेज से मिस प्रेशर लक्ष्मी व मिस्टर फ्रेशर आर्यन को चुना गया। वहीं, ग्रिप कालेज से मिस फ्रेशर शगुन पंजेटा व मिस्टर फ्रेशर अर्दिश को चुना गया। ग्रिम्ट से मिस पर्सनेलिटी नैंसी व मिस्टर पर्सनेलिटी शगुन शर्मा रहे। ग्रिप से मिस पर्सनेलिटी प्रेरणा व मिस्टर पर्सनेलिटी आदित्य को बनाया गया। मिस ईव आस्था और मिस्टर ईव मनीष को चुना गया।

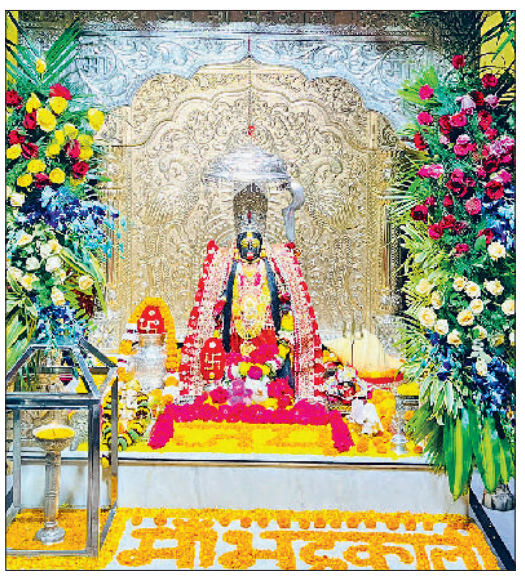
भद्रकाली मंदिर से आज निकलेगी शोभायात्रा, आश्विन नवरात्रि शक्ति महोत्सव होगा शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र

धर्मनगरी कुरुक्षेत्र स्थित हरियाणा के एकमात्र शक्तिपीठ श्री देवीकूप भद्रकाली मंदिर में आश्विन नवरात्रि शक्ति महोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। रविवार, 11 अक्टूबर को प्रथम नवरात्र के अवसर पर मां भद्रकाली की पावन ज्योति के साथ निकलने वाली विशाल शोभायात्रा से महोत्सव का भव्य शुभारंभ होगा। मंदिर प्रबंधन को शोभायात्रा में हजारों श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है। महोत्सव 26 अक्टूबर तक श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाएगा। मंदिर के पीठाध्यक्ष पं. सतपाल शर्मा ने बताया कि आश्विन नवरात्रि मां भगवती भद्रकाली की आराधना, शक्ति उपासना और आध्यात्मिक साधना का विशेष पर्व है। महोत्सव के दौरान मंदिर में प्रतिदिन सायं सात बजे श्री नवदुर्गा शक्ति हवन होगा।

19 को होगा जागरण

इसके अलावा भजन संध्या, मंगला आरती, संध्या आरती, नवरात्रि व्रत भंडारा और अन्नपूर्णा भंडारे का आयोजन किया जाएगा। 17 अक्टूबर को विशेष पूजा होगी, जबकि 19 अक्टूबर को दुर्गाष्टमी के अवसर पर रात नौ बजे भव्य जागरण आयोजित किया जाएगा। इसमें प्रसिद्ध गायक सवाई भाट महामाई का गुणगान करेंगे। इस अवसर पर मंदिर के उपाध्यक्ष डॉ. एमके मौदगिल, सेवा प्रमुख देवेंद्र गर्ग, संयोजक सुनील वर्मा एवं जीवन मौदगिल, कार्यक्रम संचालक संजीव मित्तल, पर्जन्य गौड़ सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। मंदिर प्रबंधन ने श्रद्धालुओं से नवरात्रि शक्ति महोत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लेने और धार्मिक आयोजनों को सफल बनाने में सहयोग देने की अपील की।



कुरुक्षेत्र। फूलों से सजा मा भद्रकाली का दरबार।

इन मार्गों से निकलेगी शोभायात्रा

मां भद्रकाली की पावन ज्योति का रथ विशेष रूप से सजाया जाएगा। शोभायात्रा मां भद्रकाली चौक से शुरू होकर जनता स्कूल, रोटरी चौक, रेलवे अंडरपास, अंबेडकर चौक, आर्य समाज मार्केट, गोल बैंक चौक, न्यू कॉलोनी, अमीन रोड, गोल बैंक, छठी पातशाही गुरुद्वारा, अंबेडकर चौक, पालिका बाजार, सीकरी चौक और छोटा बाजार से होते हुए रोटरी चौक, जनता स्कूल के रास्ते वापस मां भद्रकाली शक्तिपीठ पहुंचेगी। सायं छह बजे मां की पावन ज्योति को मंदिर में पुनः स्थापित किया जाएगा। पीठाध्यक्ष ने श्रद्धालुओं से अपील की कि ज्योति रथ के आगमन पर मां के सम्मान में नंगे पांव खड़े होकर श्रद्धा व्यक्त करें।

फूलों और रोशनी से सजेगा मां का दरबार

नवरात्रि महोत्सव को लेकर मंदिर परिसर को भव्य रूप दिया जा रहा है। देशी और विदेशी फूलों से मां के दरबार को सजाया जा रहा है। मंदिर के मुख्य द्वार, प्रांगण और गर्भगृह में रंग-बिरंगी रोशनी, तोरण द्वार तथा पारंपरिक एवं आधुनिक सजावट की जा रही है। मां भद्रकाली को छप्पन भोग अर्पित किया जाएगा। इसमें विभिन्न प्रकार के मौसमी फल, सूखे मेवे, मिठाइयां और विशेष पकवान शामिल होंगे।

बुजुर्गों और महिलाओं के लिए विशेष व्यवस्था

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मंदिर परिसर और जिंदल पार्क में पार्किंग की व्यवस्था की गई है। जिंदल पार्क से मंदिर तक आने-जाने के लिए निःशुल्क बैटरी चालित रिक्शा उपलब्ध रहेंगे। गर्भवती महिलाओं, गोद में दो वर्ष तक के बच्चों को लेकर आने वाली महिलाओं और 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों के लिए सीधे दर्शन की विशेष व्यवस्था की गई है। मंदिर प्रबंधन ने श्रद्धालुओं से व्यवस्था बनाए रखने, निर्धारित नियमों का पालन करने और सेवक मंडल का सहयोग करने की अपील की है। शोभायात्रा के बाद मार्गों की सफाई के लिए सेवक मंडल और कार्यकर्ताओं की ओर से विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाया जाएगा।

घर बैठे भी कर सकेंगे मां के दर्शन

पीठाध्यक्ष ने बताया कि श्रद्धालु फास्टवे केबल के चैनल नंबर 242 पर प्रतिदिन मां भद्रकाली के दर्शन कर सकेंगे। महोत्सव के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण मंदिर के फेसबुक पृष्ठ पर भी किया जाएगा, ताकि दूर-दराज के भक्त घर बैठे धार्मिक आयोजनों से जुड़ सकें। उन्होंने स्पष्ट किया कि मंदिर परिसर से बाहर मंदिर के नाम पर कोई दान पर्ची नहीं काटी जाती। यदि कोई व्यक्ति मंदिर के नाम पर दान एकत्र करता दिखाई दे, तो इसकी सूचना मंदिर प्रबंधन को दें। उन्होंने यह भी बताया कि मंदिर में सुगम दर्शन या पूजा के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता।

खबर संक्षेप



रामलीला मंचन में निकाली श्रीराम बारात

लाडवा। श्रीराम हनुमान रामलीला समिति लाडवा द्वारा रामलीला मंचन के अंतर्गत पहली बार भव्य श्रीराम बारात का आयोजन किया गया। भगवान श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के विवाह प्रसंग को जीवंत रूप में प्रस्तुत करने वाले इस आयोजन ने पूरे शहर को भक्तिमय वातावरण से सराबोर कर दिया। राजा दशरथ, गुरु वशिष्ठ और चारों भाइयों सहित निकली राम बारात आकर्षण का केंद्र रही। धार्मिक परंपराओं, विवाह की पारंपरिक रस्मों और सामाजिक सौहार्द से परिपूर्ण इस आयोजन की शहरभर में खूब सराहना हुई।

प्रथम नवरात्रि से पिहोवा में गूंजेंगे रामलीला के संवाद

पिहोवा। धर्मनगरी पिहोवा में करीब एक सदी पुरानी श्री सरस्वती राम नाटक क्लब द्वारा आयोजित रामलीला का शुभारंभ प्रथम नवरात्रि आज से होगा। रामलीला को लेकर क्लब के पदाधिकारियों एवं कलाकारों द्वारा तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। क्लब के प्रधान आशीष चक्रपाणि ने बताया कि क्लब की ओर से पिछले कई दशकों से रामलीला का मंचन कर शहर की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाया जा रहा है।

नारी के अधिकारों के बारे में दी जानकारी



कुरुक्षेत्र। देशभर में संचालित श्री जयराम संस्थाओं के परमाध्यक्ष एवं श्री जयराम शिक्षण संस्थान के चेयरमैन ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी की प्रेरणा से श्रीमती केसरी देवी लोहिया जयराम पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम के अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर हरियाणा राज्य महिला आयोग की सदस्य डा. अनुकंपा गर्ग का आगमन हुआ। इस दौरान डा. अनुकंपा गर्ग ने बच्चों को संबोधित करते हुए नारी के अधिकारों के बारे में जानकारी दी।

सरोवर पर अल सुबह से ही पहुंचने लगे भक्त

श्राद्ध अमावस्या पर ब्रह्मसरोवर में उमड़े श्रद्धालु, किया पिंडदान


कुरुक्षेत्र। ब्रह्मसरोवर पर स्नान करते श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि


कुरुक्षेत्र। ब्रह्मसरोवर पर पितरों के नामित पिंडदान करवाते श्रद्धालु।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र

श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के अवसर पर धर्मनगरी कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। शुक्रवार देर रात से ही दूर-दराज के क्षेत्रों से श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था। शनिवार सुबह अल सुबह से ही श्रद्धालुओं ने ब्रह्मसरोवर में स्नान कर अपने पितरों के निमित्त पिंडदान और तर्पण किया। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, श्राद्ध अमावस्या पर पितरों का स्मरण कर उनके निमित्त तर्पण और पिंडदान करने का विशेष महत्व है। श्रद्धालुओं ने ब्रह्मसरोवर में आस्था की डुबकी लगाकर अपने पूर्वजों की आत्मिक शांति के लिए प्रार्थना की। इस दौरान अनेक श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से धार्मिक अनुष्ठान किए और जरूरतमंदों को दान भी दिया। ब्रह्मसरोवर के आसपास सुबह से ही धार्मिक गतिविधियां देखने को मिलीं। दूर-दराज से आने वाले कई श्रद्धालु शुक्रवार को ही कुरुक्षेत्र पहुंच गए थे। उन्होंने शहर की विभिन्न धर्मशालाओं में ठहरकर शनिवार सुबह ब्रह्मसरोवर पहुंचकर स्नान व पिंडदान किया। श्रद्धालुओं की आवाजाही के चलते सरोवर के आसपास चहल-पहल बनी रही।

सरोवर पर पिंडदान का ऐतिहासिक महत्व

धर्मनगरी कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व माना जाता है। श्राद्ध पक्ष के दौरान यहां पितरों के निमित्त स्नान, तर्पण और पिंडदान करने के लिए श्रद्धालु पहुंचते हैं। मान्यता है कि पितृ पक्ष में पूर्वजों का स्मरण और उनके निमित्त धार्मिक कर्म करने से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

यातायात व्यवस्था के लिए पुलिस ने बदला रूट

श्राद्ध अमावस्या पर श्रद्धालुओं की आवाजाही को देखते हुए पुलिस ने यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए कुछ मार्गों पर रूट डायवर्ट किया। इसका उद्देश्य ब्रह्मसरोवर के आसपास भीड़ को नियंत्रित करना और यातायात को सुचारु बनाए रखना रहा। पुलिस की ओर से वाहन चालकों को निर्धारित मार्गों का इस्तेमाल करने की हिदायत दी गई।

गुर्जर धर्मशाला में 21 लाख रुपये से बने कमरों का उद्घाटन

समाज के विकास में संस्थाओं का अहम रोल : सांसद जिंदल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र



सांसद नवीन जिंदल ने कहा कि समाज के विकास में सामाजिक संस्थाओं का अहम रोल है। धार्मिक व सामाजिक संस्थाएं देश की सभ्यता संस्कृति को जीवित रखने के साथ-साथ आपसी प्रेम और भाईचारे में भी सहायक हैं। ये जितनी सशक्त होंगी, देश उतनी तेज गति से तरक्की करेगा। सांसद नवीन जिंदल बतौर मुख्यातिथि गुर्जर धर्मशाला में 21 लाख रुपए की लागत से तैयार किए गए कमरों का उद्घाटन कर रहे थे। यहां पहुंचने पर प्रधान ऋषिपाल कसाना के नेतृत्व में समाज की ओर से सांसद जिंदल का भव्य अभिनंदन किया गया। उन्होंने धर्मशाला में रहते हुए आसपास के शिक्षक संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों छात्राओं से भी मुलाकात की। सांसद ने कहा कि युवाओं के लिए उनके दरवाजे हर समय खुले हैं। युवाओं के कौशल विकास के लिए कुरूक्षेत्र संसदीय क्षेत्र में तीन इंटरनेशनल स्किल सेंटर स्थापित किए गए हैं। इसके बाद उन्होंने जाट धर्मशाला में स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे कबड्डी टूर्नामेंट में पहुंचकर खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया। जाट धर्मशाला में प्रधान डॉ. कृष्ण श्योकंद के नेतृत्व में सांसद नवीन जिंदल का जोरदार अभिनंदन किया गया। सांसद ने कहा कि खेल युवाओं को नशे से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए करियर में आगे बढ़ने का अवसर देते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नायब सैनी का विजन है कि देश खेलों के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नंबर एक पर उभर कर सामने आए।

अमावस्या पर ब्रह्मसरोवर पर ओंकार महायज्ञ कर लगाया भंडारा

कुरुक्षेत्र। जय ओंकार अंतर्राष्ट्रीय सेवाश्रम संघ, श्रीब्रह्मा मंदिर कुरुक्षेत्र की ओर से अमावस्या के अवसर पर ओंकार महायज्ञ और भंडारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संघ संस्थापक 1008 सद्गुरुदेव स्वामी शक्तिदेव जी महाराज, स्वामी संदीप ओंकार जी महाराज और स्वामी संतोष ओंकार जी महाराज कुरड़ी वालों के सानिध्य में संपन्न हुआ। श्रद्धालुओं ने ओंकार महायज्ञ में आहुति डाली और भंडारे का प्रसाद ग्रहण कर पुण्य अर्जित किया। स्वामी शक्तिदेव जी महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूणाहुति कराई। पितरों की शांति के लिए दान और महायज्ञ का महत्व बताया। महाराजश्री ने प्रेरणा दी कि इस पावन स्थल पर महायज्ञ और भंडारे में भाग लेने से श्रद्धालुओं को पुण्य प्राप्त होता है और पितरों को शांति मिलती है। कुरुक्षेत्र की भूमि पर दान, तर्पण और महायज्ञ करने से परिवार में सुख, समृद्धि और शांति बनी रहती है। पितरों की कृपा से देव कृपा और गुरु कृपा भी प्राप्त होती है। संघ संचालक पंडित शिव नारायण दीक्षित ने बताया कि महाराजश्री जी के सानिध्य में समय-समय पर ब्रह्म सरोवर के तट पर पितरों की शांति के लिए ओंकार महायज्ञ और भंडारे का आयोजन किया जाता है।



श्रीराम जन्म का प्रसंग किया प्रस्तुत



लाडवा। जय भारत कला मंच के तत्वावधान में आयोजित रामलीला मंचन के दौरान प्रभु श्रीराम के जन्म का पावन प्रसंग अत्यंत उत्साह, भव्यता और सात्विकता के साथ प्रस्तुत किया गया। सैकड़ों की संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने इस धार्मिक व सांस्कृतिक संध्या का आनंद लिया और पूरा परिसर जय श्री राम के जयकारों से गुंजायमान रहा। रामलीला का शुभारंभ कलाकृति भवन के उपाध्यक्ष महेश जोशी व साहिल अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर प्रभु श्री राम की आरती उतार कर किया।

हरिओम मंदिर में वाटर कूलर स्थापित



कुरुक्षेत्र। महाराजा श्रीअग्रसेन जयंती के उपलक्ष्य में श्रीवैश्य अग्रवाल पंचायत सभा की ओर से शास्त्री नगर स्थित हरिओम मंदिर परिसर में वाटर कूलर स्थापित किया गया। पंचायत के प्रधान विशाल सिंगला और कार्यकारिणी सदस्यों ने वाटर कूलर का उद्घाटन किया। इस पहल का उद्देश्य मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों को शीतल पेयजल उपलब्ध करवाना है। इस अवसर पर मंदिर परिसर में श्रीसुंदरकांड पाठ का आयोजन भी किया गया। सुंदरकांड पाठ का आयोजन श्रीबालाजी परिवार द्वारा रामनिवास बंसल के सानिध्य में किया गया। इस अवसर पर पंचायत के उपप्रधान जितेंद्र गोयल, सचिव नवकेतन गोयल, कोषाध्यक्ष विशेष गर्ग, सह सचिव अभय मित्तल, मास्टर सतपाल गुप्ता, राजीव गर्ग, जयपाल गोयल, कुलवंत गर्ग, गौरव मित्तल, डॉ. अनीश सिंगला और गौरव तायल मौजूद रहे। कार्यक्रम में सुभाष अरोड़ा, अचला अरोड़ा, पवन गुप्ता, विपिन गुप्ता, वीना गुप्ता वंदना चावला, प्रवीण गोयल, बिमल गर्ग, तरुण वधवा, आनंद महाजन, विरेंद्र शौरी, बसंत मिड्ढा, मंजू मिड्ढा, सुभाष गुप्ता, जितेंद्र तलवाड़, प्रो. राकेश कुमार, राकेश सूरी, बाबूराम, अनिल गर्ग, प्रेम शर्मा, विजय अरोड़ा आदि मौजूद रहे।

आज महाराजा अग्रसेन जयंती पर होंगे प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र

श्री वैश्य अग्रवाल पंचायत द्वारा आयोजित महाराजा अग्रसेन जयंती के चार दिन से चल रहे समारोह के कार्यक्रमों में सहयोग के अंतर्गत श्री अग्रसेन यूथ एसोसिएशन (साया) की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में 11 अक्तूबर को महाराजा अग्रसेन जयंती आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रमों की विस्तृत चर्चा की गई तथा कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई। बैठक में साया के प्रधान नवीन बंसल ने बताया गया कि अग्रसेन जयंती के अवसर पर रविवार के दिन की शुरूआत हवन-यज्ञ से होगी। अग्रवाल धर्मशाला मोती चौक में 18 कुंडीय हवन यज्ञ का आयोजन किया जाएगा, जिसमें कुरुक्षेत्र के सांसद नवीन जिंदल भी शिरकत करेंगे। इसके बाद अग्रसेन चौक पर महाराजा अग्रसेन जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया जाएगा। तत्पश्चात रेलवे स्टेशन स्थित अग्रवाल धर्मशाला में प्रीतिभोज का आयोजन होगा। शाम को अग्रसेन चौक पर भव्य आतिशबाजी एवं आरती का आयोजन किया जाएगा। इसके पश्चात शाम 7 बजे अग्रसेन पब्लिक स्कूल में भव्य काव्य सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर साया के प्रधान नवीन बंसल ने कहा कि महाराजा अग्रसेन जी के आदर्श समाज में समानता, सेवा, सहयोग और भाईचारे की भावना को मजबूत करने की प्रेरणा देते हैं।



विज्ञान ड्रामा स्पर्धा में भेरियां स्कूल की टीम प्रथम



कुरुक्षेत्र। अक्षरा इंटरनेशनल स्कूल, पिहोवा में शुक्रवार को खंड स्तरीय विज्ञान ड्रामा प्रतियोगिता-2026 का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में खंड पिहोवा के विभिन्न राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लेकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भेरियां की टीम ने प्रथम, अक्षरा इंटरनेशनल स्कूल की टीम ने द्वितीय और गुरु नानक देव अकादमी की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता का मुख्य विषय ह्यमानव जाति के कल्याण के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकीह्ल (साइंस एंड सोसाइटी) रहा। इसके तहत विद्यार्थियों ने कृत्रिम बुद्धिमत्ताः मित्र, साधन या चुनौती, इलेक्ट्रिक वाहनः भविष्य की राह, अंतरतारकीय आवास और महासागरों का संरक्षण जैसे विषयों पर नाटकों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रस्तुतियों में वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता, अभिनय कौशल और टीम भावना देखने को मिली। कार्यक्रम की अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी रामराज कौशिक ने की। अक्षरा इंटरनेशनल स्कूल के प्रधानाचार्य दुर्गेश कुमार शर्मा कार्यक्रम के नोडल इंचार्ज रहे, जबकि राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बाखली के अर्थशास्त्र प्रवक्ता नरेश कुमार शर्मा ने समन्वयक की भूमिका निभाई।

श्रीदक्षिणा काली पीठ में सातवां चंडी महायज्ञ आज से: श्रीमहंत बंसी पुरी

पिहोवा। नवरात्र के उपलक्ष्य में श्री दक्षिणा काली पीठ, मॉडल टाउन में 11 से 19 अक्टूबर तक सातवें चंडी महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। पीठ के श्रीमहंत बंसी पुरी महाराज और व्यवस्थापक स्वामी खटवांग पुरी महाराज ने बताया कि रविवार को महायज्ञ का शुभारंभ प्रायश्चित हवन, ध्वजारोहण, पंचांग पूजन, मंडप प्रवेश और महाआरती के साथ होगा। यज्ञाचार्य डॉ. अभिषेक कुश के सान्निध्य में ब्राह्मण वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा-अर्चना करवाएंगे और यजमानों से आहुतियां डलवाएंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार भारत भूषण भारती, भाजपा नेता जय भगवान शर्मा डीडी, विधायक मनदीप चट्ठा और समाजसेवी प्रदीप सैनी, पार्षद राजेश गोयल, कैबिनेट मंत्री के सुपुत्र गौरव बेदी सहित कई गणमान्य लोग शामिल होंगे। श्रीमहंत बंसी पुरी महाराज ने कहा कि शाफ्ट परंपरा अनुसार क लियुग में मां दुर्गा वह गणपति जी की उपासना श्रेष्ठ बताई गई है महामाया आद्या शक्ति समय-समय पर अलग-अलग अवतार लेकर विभिन्न स्वरूपों में महाकाली महालक्ष्मी तथा महासरस्वती तीन चरित्र के माध्यम से श्री दुर्गा सप्तशती में वर्णित है। मां दुर्गा की उपासना से सुख, समृद्धि और आरोग्य की प्राप्ति होती है। स्वामी खटवांग पुरी ने बताया कि 19 अक्टूबर सोमवार को पूर्ण होती कन्या पूजन एवं भंडारे के साथ चंडी महायज्ञ का समापन होगा।



नाबार्ड के सहयोग से दयालपुर में रेजिन आर्ट प्रशिक्षण शुरू



कुरुक्षेत्र। ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से चहक फाउंडेशन ने नाबार्ड के सहयोग से गांव दयालपुर में 15 दिवसीय रेजिन आर्ट एवं सजावटी उत्पाद प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। कार्यक्रम का उद्घाटन गांव के सरपंच सुरेश समाजसेवी ने किया। इसमें 30 ग्रामीण महिलाएं प्रशिक्षण लेंगी। प्रशिक्षण के दौरान मोनिका दुआ ने महिलाओं को रेजिन आर्ट की जानकारी देते हुए बताया कि इसके माध्यम से की-चेन, फोटो फ्रेम, सजावटी ट्रे, ज्वेलरी और नेम प्लेट जैसे उत्पाद बनाए जा सकते हैं। महिलाओं को रेजिन मिक्सिंग, मोल्डिंग, डिजाइनिंग और फिनिशिंग की तकनीकें सिखाई जाएंगी।

नोएडा के द गौर सरोवर प्रीमियर होटल में अंतरराष्ट्रीय सम्मान एवं दीक्षांत समारोह में किया सम्मानित

45 साल की सेवा के लिए गुलशन ग्रोवर को मानद डॉक्टरेट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कुरुक्षेत्र

समाज सेवा के क्षेत्र में 45 वर्षों से अधिक समय से योगदान दे रहे कुरुक्षेत्र के समाजसेवी गुलशन कुमार ग्रोवर को सेंट्रल क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी, अमेरिका की ओर से कम्युनिटी सर्विस एंड सोशल लीडरशिप विषय में मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान नोएडा स्थित द गौर सरोवर प्रीमियर होटल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मान एवं दीक्षांत समारोह में प्रदान किया गया। ग्रोवर का नामांकन प्रोफेसर वीके अग्रवाल ने किया था। प्रेस नोट के अनुसार, उनके समाजसेवा संबंधी कार्यों का आकलन साक्षात्कार, लिखित परीक्षा और विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ पैनल चर्चा के बाद किया गया। समारोह में ग्रोवर ने अपने सेवा कार्यों का उल्लेख करते हुए विश्वविद्यालय और आयोजकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने करीब 35 सामाजिक, धार्मिक और जनकल्याणकारी संस्थाओं के साथ मिलकर सेवा कार्य किए हैं।


कुरुक्षेत्र। समाजसेवी गुलशन कुमार ग्रोवर को मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित करते अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

पिता से मिली समाज सेवा की प्रेरणा

गुलशन कुमार ग्रोवर को समाज सेवा की प्रेरणा अपने स्वर्गीय पिता घनश्याम दास ग्रोवर से मिली। उनके पिता किसी भी व्यक्ति की अर्थी को कंधा देकर श्मशान घाट तक पहुंचाने में सहयोग करते थे। बचपन से ही ग्रोवर छोटे-छोटे सेवा कार्यों में रुचि लेते थे, लेकिन 1970 के दशक में हुआ एक सड़क हादसा उनके जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। ग्रोवर के अनुसार, उन्होंने कुछ अन्य लोगों की मदद से दुर्घटनाग्रस्त कार में फंसे चार व्यक्तियों को बाहर निकाला, जिनमें से दो की जान बचाने में मदद मिली। विश्वविद्यालय के मॉडर्न यूरोपियन लैंग्वेजेज विभाग की स्टूडेंट्स यूनियन के प्रधान के रूप में भी उन्होंने विद्यार्थियों के कल्याण के लिए कई कार्य किए। ग्रोवर अब तक 38 बार रक्तदान कर चुके हैं।

योग गौरव सम्मान से भी हो चुके हैं सम्मानित

इसी वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पंचकूला में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में हरियाणा योग आयोग की अनुशंसा पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गुलशन कुमार ग्रोवर को राज्य स्तरीय योग गौरव सम्मान प्रदान किया था। ग्रोवर ने अपने सभी सम्मानों का श्रेय परमपिता परमेश्वर, अपने सद्गुरुओं, स्वर्गीय माता-पिता, परिवार के सदस्यों और उन संस्थाओं व सहयोगियों को दिया, जिनके साथ मिलकर उन्होंने समाज सेवा के कार्य किए हैं। उन्होंने कहा कि वह जीवन के अंतिम समय तक समाज सेवा के लिए संकल्पबद्ध रहेंगे।

खबर संक्षेप

निगरानी के लिए ड्रोन तैनात करने का निर्णय

अंबाला। कृषि निदेशक डॉ. वजीर सिंह ने बताया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के दिशा-निर्देशन में फसल अवशेष जलाने की घटनाओं की प्रभावी निगरानी एवं रोकथाम के उद्देश्य से आधुनिक तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के निर्देशों की अनुपालना में राज्य के प्रमुख धान उत्पादक जिलों में फसल अवशेष जलाने की घटनाओं की निगरानी के लिए ड्रोन तैनात करने का निर्णय लिया गया। उन्होंने बताया कि प्रत्येक जिले में दो ड्रोन तकनीकी टीम के साथ उपलब्ध करवाए जाएंगे। ड्रोन की तैनाती दृश्या द्वारा की जाएगी तथा तकनीकी टीम लगभग 45 दिनों तक ड्रोन संचालन एवं निगरानी का कार्य करेगी। ड्रोन संचालन के दौरान ड्रोन नियम एवं प्रावधानों का पालन सुनिश्चित किया जाएगा।

मतदाता बनने के लिए युवाओं ने भरे फार्म

शहजादपुर। भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन अधिकारीके निर्देशानुसार निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी एवं उपमंडल अधिकारी (नागरिक) शिवजीत भारती के मार्गदर्शन में नारायणगढ़ विधानसभा क्षेत्र के शैक्षणिक संस्थानों में विशेष मतदाता शिविर आयोजित किए जा रहे है। इन शिविरों में 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके पात्र युवाओं के नए मतदाता पंजीकरण के लिए प्रपत्र संख्या-6 भरवाए गए। राजकीय महाविद्यालय नारायणगढ़ में विगत दिवस इसी प्रकार का एक कैंप आयोजित किया गया। जिसमें विद्यार्थियों तनु, रविंदर कौर, ज्योति, मुस्कान, रमनदीप, मानवी, शीतल, रितु, ऋतिकेश, अनुज शर्मा और पूजा ने मतदाता बनने के लिए आवेदन किया।

भूगोल प्रश्नोतरी प्रतियोगिता हुई

बराड़ा। अकाल अकादमी होली एट में शनिवार को अंतर-सदनीय भूगोल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कलगीधर ट्रस्ट बड़ू साहिब द्वारा संचालित विद्यालयै में आयोजित इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने अपनी भौगोलिक समझ, सामान्य ज्ञान और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों में सवालों के सही जवाब देने को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला। प्रतियोगिता चार वर्गों में आयोजित की गई। प्रश्नोत्तरी में देशों, महाद्वीपों, महासागरों, भौगोलिक अवधारणाओं और विश्व के प्रमुख स्थलों से संबंधित सवाल पूछे गए।

सुने घर से लाखों का सामान ले उड़े चोर

जींद। कृष्णा कालोनी में परिवार के लोग अयोध्या दर्शन के लिए गए थे। पीछे से चोरों ने मकान का ताला तोड़ कर नकदी, सोने व चांदी के जेवरात समेत लाखों रुपये कीमत का सामान चोरी कर लिया। शहर थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर चोरी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। कृष्ण कालोनी निवासी यमन ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह परिवार समेत अयोध्या राम मंदिर के दर्शन करने गया हुआ था। पीछे से चोरों ने मकान का ताला तोड़ कर पचास हजार की नकदी, दो सोने के कड़े सोने का टिकड़ा समेत अन्य सामान गायब मिला। घटना का पता घर वापस लौटने पर चला।

रेलगाड़ियां रद्द होने से यातायात पर पड़ा बुरा असर

सीजेपी के आंदोलन की वजह से दिल्ली जाने वाली दस ट्रेन रद्द, यात्री परेशान

- अधिकारी बोले-सुरक्षा कार्य के लिए ब्लॉक की वजह से रद्द करनी पड़ी ट्रेनें

हरिभूमि न्यूज ⏭ अंबाला

कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के दिल्ली में आंदोलन की वजह से शनिवार को रेल यातायात पूरी तरह से ठप रही। दिल्ली जान वाली दर्जनों प्रमुख ट्रेनों को रद्द कर दिया है। राजधानी में प्रदर्शन के दौरान जुटने वाली भीड़ को आयोजन स्थल तक पहुंचने से रोकने के उद्देश्य से ट्रेनों के निरस्त करने की बात कही जा रही है। हालांकि मामले पर अधिकारी स्पष्ट जबाव देने से बच रहे हैं। रेलवे के अनुसार ट्रेनों का यह निरस्तीकरण सुरक्षा व संरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्टेशनों और रेल ट्रैक पर चल रहे रखरखाव और तकनीकी ब्लॉक के कारण किया गया है। उत्तर रेलवे की सूची के अनुसार 10 अक्तूबर को दिल्ली, नई दिल्ली और हजरत निजामुद्दीन आने-जाने वाली प्रमुख प्रीमियम, सुपरफास्ट व एक्सप्रेस ट्रेनों का परिचालन ठप रहा। कई ट्रेनों को रैक उपलब्ध न होने के कारण रद्द घोषित किया गया है। रेलवे नोटिस के अनुसार 10 अक्तूबर को नई दिल्ली और निजामुद्दीन से संचालित होने वाली प्रमुख ट्रेनों ट्रेन नंबर 12058 / 12057 दौलतपुर चौक-नई दिल्ली-दौलतपुर चौक जनशताब्दी एक्सप्रेस, 12056 देहरादून-नई दिल्ली देहरादून एक्सप्रेस, 12014/12006 अमृतसर-नई दिल्ली और कालका-नई दिल्ली शताब्दी एक्सप्रेस, 12033/12034 कानपुर सेंट्रल-नई दिल्ली व नई दिल्ली-कानपुर शताब्दी एक्सप्रेस, 82501/82502, 14211/12420, 15303/15305/15306/15307 पैसेंजर, 20451/12452, 22182/12190/12122, 12560/12582, 12418/12276, 12448, 12302, 12314, 20802, 12310/12394/22362, 12445/22461/04081 नई दिल्ली-श्री माता वैष्णो देवी कटरा उत्तर संपर्क क्रांति व स्पेशल ट्रेन को रद्द किया है। अंबाला मंडल के वरिष्ठ वाणिज्य प्रबंधक यशनजीत सिंह ने बताया कि रेलवे लाइनों पर चल रहे सुरक्षा कार्य को लेकर अलग-अलग जगह पर ब्लॉक लिए गए हैं। इसलिए ट्रेनों को रद्द करने का फैसला किया गया है। इसके तहत कंफर्म टिकट यात्रियों को संदेश भेजे जा रहे हैं। वहीं स्टेशन पर भी टिकट रिफंड के लिए कर्मचारियों की तैनाती की गई है।



अंबाला। वीरान पड़ा रेलवे स्टेशन। फोटो: हरिभूमि

स्टेशन पर भटकते मिले यात्री

दिल्ली जाने वाली प्रमुख ट्रेनों के रद्द होने से अंबाला छावनी के रेलवे स्टेशन पर शनिवार को ज्यादातर यात्री भटकते मिले। ज्यादातर यात्रियों का आरोप था कि ट्रेनें रद्द होने की रेलवे की ओर से कोई सूचना नहीं आई है। हालांकि रेलवे की ओर से सभी कंफर्म टिकट वाले यात्रियों को सूचना भेजने की बात कही है। कई यात्रियों को बेहद जरुरी काम की वजह से दिल्ली व उससे आगे जाना था। मगर ट्रेनों के रद्द होने से उन्हें वैकल्पिक साधनों का इस्तेमाल करना पड़ा। दिल्ली जाने वाले सुरेंद्रपाल व शोभित ने बताया कि रेलवे स्टेशन पर आने के बाद ही उन्हें ट्रेन कैंसिल होने की सूचना मिली। दोनों यात्रियों ने कहा कि बेहद जरूरी काम के लिए उन्हें दिल्ली जाना था। अब उन्हें दिल्ली जाने लिए बस या फिर दूसरे साधन का इस्तेमाल करना पड़ेगा। इसी तरह दूसरे यात्रियों ने भी व्यवस्था को जमकर कोसा। यात्रियों ने कहा कि सीजेपी के आंदोलन की वजह से रेलवे को अचानक ट्रेनें रद्द नहीं करनी चाहिए थी। उल्टा इससे तो रेलवे को फायदा होता। उन्होंने कहा कि रेलवे के ऐसे फैसलों से विभाग को ही नुकसान हो रहा है।

अंबाला : यात्रावृत्त संग्रह यात्राओं के इंद्रधुनष पुरस्कार के लिए चयनित

- साहित्यकार एवं यात्रा लेखक डॉ. प्रदीप शर्मा व अनीता शर्मा स्नेही ने संयुक्त रूप से लिखा पहला यात्रावृत संग्रह

हरिभूमि न्यूज ⏭ अंबाला


प्रदीप शर्मा व अनीता शर्मा स्नेही।

साहित्यकार एवं यात्रा लेखक डॉ. प्रदीप शर्मा ' स्नेही ' और अनीता शर्मा ' स्नेही ' को यात्रा साहित्य में योगदान पर उनके संयुक्त रूप से लिखे गए पहले यात्रावृत्त संग्रह ' यात्राओं के इंद्रधुनष ' को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा विभिन्न विधाओं और भाषाओं की साहित्यिक कृतियों को पुरस्कृत करने की योजना के अंतर्गत चयनित किया गया है।उल्लेखनीय है एसए जैन. कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. प्रदीप शर्मा ' स्नेही ' की अब तक चौबीस पुस्तकें साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रकाशित होने के साथ-साथ लगभग 2000 विभिन्न विधाओं की रचनाएं देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।इनमें से तीन पुस्तकें हरियाणा साहित्य अकादमी और एक पुस्तक हरियाणा ग्रंथ अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित हुई।उनकी जीवनसंगिनी देव समाज गर्ल्स कॉलेज की पूर्व प्राचार्या अनीता ' स्नेही' की साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित कविता संग्रह के साथ- साथ चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।डॉ. स्नेही विगत पचास वर्षों से यात्रा साहित्य पर कार्य कर रहे हैं।उनकी पूर्वी अफ्रीका के वन अभयारण्यों और कुमायूं गढ़वाल हिमालय की विभिन्न घाटियों की शोधयात्राओं पर आधारित पहला यात्रावृत्त संगह ' किलीमंजारो से हिमालय तक' 2005 में हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित हुआ था। 2021 में कनाडा यात्रा पर आधारित उनका दूसरा यात्रावृत्त संग्रह ' हेलीफैक्स से ल्यूनेनबर्ग तक' प्रकाशित हुआ।2022 से डॉ. प्रदीप ' स्नेही ' ने अपनी जीवन साथी अनीता ' स्नेही ' के साथ संयुक्त रूप से यात्रावृत्त लिखने आरंभ किए।

गौरव की बात

सेवाकाल की पूर्णता के बाद से स्नेही दम्पत्ति निरंतर देश- विदेश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राओं करने के बाद वहां की जीवनशैली , लोक संस्कृति , लोक मान्यताएं और प्रकृति प्रदत्त सुषमा से आप्लावित प्राकृतिक स्थलों और प्राच्य एवं ऐतिहासिक स्थलों के विवरण को अपने यात्रावृतों में खूबसूरती से पिरो रहे हैं। स्नेही दंपति का सम्मानित होना उनकी सतत साहित्य सेवा का प्रतिफल है और निश्चित रूप से जिले के लिए गौरव की बात है।सेवा निवृति के बाद भी स्नेही दम्पति निरंतर समाज सेवा के विभिन्न प्रकल्पों, लेखन और यायावरी से जुड़े रह कर समय का सदुपयोग कर रहे हैं।

बीमार गाय के साथ क्रूरता

- सीसीटीवी कैमरों की जांच में डेयरी संचालक की पहचान, माफी मांगकर छुड़ाई जान

हरिभूमि न्यूज ⏭ अंबाला

अंबाला शहर के रेलवे रोड के पास बीमार गाय के साथ कथित क्रूरता का मामला सामने आया है। सोशल मीडिया पर वायरल 1.46 मिनट के वीडियो में दो व्यक्ति गाय को डंडे मारते और उसकी पूंछ पकड़कर खींचते दिखाई दे रहे हैं। गाय जमीन पर गिर जाती है, इसके बावजूद उसे उठाने के लिए डंडे का इस्तेमाल किया जाता है। घटना का वीडियो सामने आने के बाद गौ सेवा से जुड़ी संस्थाओं ने पुलिस को शिकायत देकर कार्रवाई की मांग की। श्री कृष्ण गौ सेवा सोसायटी के प्रधान मोनू चावला के अनुसार वंदे मातरम दल के प्रधान भरत को फोन पर सूचना मिली थी कि रेलवे रोड पर एक गाय बीमार और घायल अवस्था में पड़ी है। इसके बाद गौ सेवकों की टीम मौके पर पहुंची और गाय का उपचार कराया। पुलिस चौकी नंबर-2 के इंचार्ज एएसआई अरुण कुमार ने बताया कि कृष्ण गौ सेवा सोसायटी की ओर से देर रात फोन पर सूचना और लिखित शिकायत मिली थी। शिकायत में आरोप लगाया गया था कि दूध देने में असमर्थ और बीमार हो चुकी गाय को घर से बाहर निकाल दिया गया। इसके बाद पुलिस टीम को मौके पर भेजा गया। सीसीटीवी फुटेज की जांच की गई। फुटेज के आधार पर अंबाला शहर के अकब सराय के सुमित को बुलाकर पूछताछ की।

मालिक के बारे में जानकारी जुटाई

आसपास के लोगों से पूछताछ के दौरान गाय के मालिक के बारे में जानकारी जुटाई गई। इसके बाद सीसीटीवी कैमरों की फुटेज चेक की गई जिसमें गाय के साथ मारपीट किए जाने की घटना सामने आई। वायरल वीडियो में एक व्यक्ति सिर पर भगवा रंग का गमछा बांधे दिखाई देता है। उसके हाथ में डंडा है। वह गाय को डंडे मारता है। उसकी पूंछ पकड़कर दूसरी तरफ खींचने लगता है। इसी दौरान पूंछ को तेजी से खींचने पर गाय जमीन पर गिर जाती है। इसके बाद दूसरा व्यक्ति भी वहां पहुंचता है और साथी के हाथ से डंडा लेकर गाय को उठाने की कोशिश करता है। दूसरा व्यक्ति गाय की पूंछ पकड़कर उसे उठाने का प्रयास करता रहता है। वीडियो में गाय की खराब हालत के बावजूद उसे खींचने और उठाने की कोशिश दिखाई देती है।

11 हजार केवी की हाईवोल्टेज लाइन बनी हादसे की वजह

हरिभूमि न्यूज ⏭ बराड़ा

हाईवोल्टेज करंट से जेठानी की मौत, हादसे में देवरानी बेहोश

नए मकान में लेंटर डालने की चल रही थी तैयारी


मृतक महिला की फाइल फोटो।

- गांव अधोया हिंदुआन में घर बनाने की खुशियां मातम में बदली

गांव अधोया हिंदुआन में घर बनाने की खुशियां उस समय मातम में बदल गईं जब घर के ऊपर से गुजर रही हाईवोल्टेज बिजली की तार की चपेट में आने से एक विवाहिता की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि उसकी देवरानी करंट का झटके लगते ही बेहोश हो गई। यह हादसा उस समय हुआ, जब परिवार नए मकान पर लेंटर डालने की तैयारी में जुटा था। घटना के बाद घर में चीख-पुकार मच गई। परिवार की खुशियां पलभर में मातम में बदल गईं। गांव अधोया हिंदुआन के तोलांवली रोड पर सुभाष अपने नए मकान का निर्माण करवा रहे थे। शनिवार को छत पर लेंटर डालने के लिए सरिए का जाल बिछाया गया था। शाम को काम पूरा होने के बाद बाकी बचे हुए सरिये को संभालकर रखा जा रहा था। बताया जा रहा है कि इसी दौरान सुभाष की पत्नी रितु जब सरिया उठाने लगी तो वह मकान के ऊपर से गुजर रही 11 हजार केवी की हाईवोल्टेज बिजली की तार को छू गया। उस सरिए में करंट आने से रितु बुरी तरह झुलस गई। यह हादसा इतना अचानक हुआ कि परिवार के लोगों को संभलने का मौका तक नहीं मिला। रितु को करंट की चपेट में आया देखकर उसकी देवरानी भी बेहोश हो गई। परिजन आनन-फानन में दोनों को अस्पताल लेकर पहुंचे। यहां चिकित्सकों ने रितु को मृत घोषित कर दिया। देवरानी का एमएम अस्पताल में उपचार चल रहा है।

बिजली लाइनों को हटाने की मांग

घटना पर दुख जताते हुए अधोया के सेवानिवृत्त सब इंस्पेक्टर दलीप सिंह ने घरों के ऊपर से गुजर रही हाईवोल्टेज बिजली लाइनों को हटाने की मांग की। उन्होंने कहा कि ऐसी लाइनें लोगों की जान के लिए गंभीर खतरा बनी हुई हैं। इस हादसे ने एक बार फिर रिहायशी इलाकों में गुजर रही हाईवोल्टेज लाइनों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है। उधर थाना प्रभारी रामकरण सैनी ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। पोस्टमार्टम के बाद महिला का शव परिजनों को सौंप दिया जाएगा।

नमी के नाम पर काटे जा रहे रुपये, पोर्टल सिस्टम ने बढ़ाई किसानों की मुश्किलें : अर्जुन

हरिभूमि न्यूज ⏭ अंबाला

इनेलो नेता व रानियां विधानसभा क्षेत्र से विधायक चौधरी अर्जुन चौटाला ने शनिवार को अंबाला छावनी की अनाज मंडी का दौरा किया। यहां उन्होंने किसानों से बातचीत कर धान खरीद और उठान में आ रही समस्याओं को लेकर सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि मंडियों में धान की समय पर लिफ्टिंग नहीं हो रही। नमी के नाम पर किसानों के पैसे काटे जा रहे हैं और फसल बेचने के लिए पोर्टल पर फिंगरप्रिंट जैसी प्रक्रिया से किसानों को परेशानी उठानी पड़ रही है। चौटाला ने कहा कि सरकार ने इन समस्याओं का समाधान नहीं किया तो इनेलो प्रदेशभर में बड़ा आंदोलन करेगी। उन्होंने कहा कि पार्टी लगातार सरकार से पोर्टल व्यवस्था बंद करने की मांग कर रही है। इसके लिए पार्टी ने जिला स्तर पर डीसी के माध्यम से ज्ञापन देने का फैसला किया था। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी अभय सिंह चौटाला राज्यपाल को भी ज्ञापन देने पहुंचे थे। इसके बावजूद किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि पार्टी इस बार सरकार को आखिरी चेतावनी देगी। यदि पोर्टल व्यवस्था बंद नहीं हुई, समय पर लिफ्टिंग शुरू नहीं हुई और किसानों का पूरा धान नहीं खरीदा गया तो किसानों के साथ मिलकर प्रदेश स्तर पर आंदोलन किया जाएगा। चौटाला ने कहा कि मंडियों में नमी के नाम पर किसानों के पैसे काटे जा रहे हैं। सरकार को कटौती करने की बजाय मंडियों में धान सुखाने के लिए ड्राइंग यूनिट लगाने चाहिए।


अंबाला। किसानों से बातचीत करते विधायक अर्जुन चौटाला।

जागरूकता ही एड्स से बचाव : गिल

- नशा एवं एचआईवी पर नाटक के द्वारा लोगों को किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭ जींद

पितृ अमावस्या के दिन गांव पांडु पिंडारा में शनिवार को यूथ एजुकेशन सोसाइटी के कलाकारों ने नशा एवं एचआईवी एड्स पर लोगों का मनोरंजन करते लोगों को जागरुक भी किया। जिसमें किरण गिल ने एक काउंसलर की भूमिका निभाते हुए बताया कि एचआईवी एड्स किन कारणों से फैलती है, इनके लक्षण क्या है और एचआईवी एड्स से कैसे बचा जा सकता है। लोगों को बताया गया कि अहम बात यह है कि बचाव ही इलाज है। इस नाटक में एक कहानी में बताया गया कि अगर कोई बच्चा बाहर पढ़ रहा है तो हमें उसका ध्यान रखना चाहिए और समय- समय पर हमें उससे मिलते रहना चाहिए। क्योंकि जो बच्चा बाहर पड़ता है, हम उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते हैं और वह किसी बुरी संगति में पड़ के नशे का आदि हो जाता है और एचआईवी वायरस की चपेट में आ जाता है। इसलिए समय-समय पर बच्चे का ध्यान रखें और उसे पढ़ाई के साथ साथ अच्छे संस्कार भी देने चाहिए। क्योंकि पढ़ाई जैसे हमारे जीवन में पूरी जिंदगी काम आती है, वे ही संस्कार भी हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा हैं। इसलिए दोनों ही चीज जिंदगी में होनी जरूरी है। इस प्रकार कलाकारों ने बहुत ही अच्छे तरीके से नाटक प्रस्तुत किया एवं लोगो का हंसी मजाक व डांस के माध्यम से लोगो को जागरूक किया। कलाकारों की भूमिका रमेश सैनी, किरण गिल, हारमोनियम मास्टर राजेंद्र, ढोलक मास्टर प्रकाश एवं सीमा मौजूद रहे।


जींद। नृत्य के माध्यम से जानकारी देते किरण गिल व अन्य। फोटो :हरिभूमि

अनुदान के लिए किसान करें आवेदन

अंबाला। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा गन्ने की खेती को बढ़ावा देने और किसानों की आय में वृद्धि करने के उद्देश्य से गन्ना तकनीकी उद्देश्य परियोजना वर्ष 2026-27 चलाई जा रही है। इस संबंध में सहायक गन्ना विकास अधिकारी डॉ. अपूर्वा ने बताया कि योजना के तहत गन्ने की अधिसूचित एवं अनुशंसित किस्मों की उन्नत तकनीकों से बिजाई करने तथा रेटून (मूढ़ा) फसल के बेहतर प्रबंधन के लिए किसानों को अनुदान दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रमोशन ऑफ वाइड रो स्पेसिंग यानी चार फीट चौड़ी कतारों में बिजाई, सिंगल बड एवं बड चिप विधि से बिजाई (केवल शरदकालीन बिजाई के लिए मान्य), फाउंडेशन सीड नर्सरी तथा बीज उपचार विधियों के माध्यम से गन्ने की बिजाई के प्रदर्शन प्लॉट लगाने वाले किसानों को 5,000 रुपये प्रति एकड़ की अनुदान राशि दी जाएगी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20, फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

शिविर | मिक्की मॉडल स्कूल श्याम नगर में नि:शुल्क मेगा मेडिकल चेकअप कैंप का आयोजन किया

मेगा मेडिकल चेकअप कैंप में 650 लोगों ने करवाई स्वास्थ्य की जांच

हरिभूमि न्यूज ⏭ अंबाला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस एवं उनकी 25 वर्षों की जनसेवा को समर्पित सेवा संकल्प अभियान के तहत परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज के मार्गदर्शन में शनिवार को भारतीय जनता पार्टी द्वारा मिक्की मॉडल स्कूल, श्याम नगर में निशुल्क मेगा मेडिकल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। इसमें 650 लोगों ने अपनी स्वास्थ्य जांच करवाई। इस अवसर पर नगर परिषद की अध्यक्ष स्वर्ण कौर ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कैंप में पहुंचने पर पीएमओ डॉ. पूजा एवं भाजपा पदाधिकारियों ने पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। इस दौरान नगर परिषद अध्यक्षा ने डॉक्टरों द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी ली। कैंप में पहुंचे लोगों से संवाद भी किया। स्वर्ण कौर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस एवं उनकी 25 वर्षों की जनसेवा को समर्पित सेवा संकल्प अभियान के तहत देशभर में 17 सितंबर से 17 अक्तूबर तक विभिन्न जनकल्याणकारी गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में कैबिनेट मंत्री अनिल विज के मार्गदर्शन में इस निशुल्क मेडिकल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के शिविरों से आमजन और जरूरतमंद लोगों को घर-द्वार के नजदीक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध होती हैं जिससे उन्हें काफी लाभ मिलता है।



अंबाला। शिविर में आई नप चेयरपर्सन का अभिनंदन करते पार्टी कार्यकर्ता।

ये रहे मौजूद

कैंप के दौरान डॉक्टरों की टीम ने लोगों के स्वास्थ्य की जांच की। उन्हें निशुल्क मेडिकल टेस्ट और दवाइयों की सुविधा उपलब्ध करवाई। इसके साथ ही लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने और समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करवाने के लिए प्रेरित किया गया। शिविर का उद्देश्य आमजन को सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के साथ-साथ स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। इस मौके पर नगर परिषद के वाइस चेयरमैन ललता प्रसाद, बिजली बोर्ड निदेशक आरती सहगल, मंडल प्रभारी किरण पाल चौहान, नप सदस्य संजीव अत्री, मंडल अध्यक्ष विकास बहगल एवं हर्ष बिंद्रा, महामंत्री भरत कोछड़ एवं रामबाबू यादव, शास्त्री मंडल प्रधान प्रवेश शर्मा, वार्ड महिला मोर्चा की रितु वालिया भी उपस्थित रही।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 अक्टूबर 2026

संस्कृति-आस्था का उल्लास
नवरात्रों के बहुरंगी उत्सव


बंगाल की पारंपरिक दुर्गा पूजा


गुजरात में नवरात्र का महत्वपूर्ण अंग-डांडिया


ओडिशा के कटक में 'चांदी मेधा' से सजी मां दुर्गा की प्रतिमा


उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान होता है रामलीला का आयोजन

शारदीय नवरात्र विशेष

भारत के विभिन्न स्थानों में नवरात्र मनाने के अलग-अलग तरीके हैं। ये इस बात के प्रमाण हैं कि हमारी संस्कृति कितनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। बंगाल की कलात्मकता, गुजरात का नृत्य, दक्षिण का गोलू और मैसूर का राजसी वैभव, सब मिलकर एक ही सनातन शक्ति की आराधना करते हैं। यह विविधता ही हमारे देश की असली पहचान और सुंदरता है। आइए भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों और दुर्गा पूजा के अनूठे और मनमोहक स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं।

आवरण कथा
शिखर चंद जैन

विविधता में एकता का महापर्व नवरात्रों में होने वाली दुर्गा पूजा, भारत के सबसे बड़े और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह केवल मां शक्ति की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक, सामाजिक समरसता और उल्लास का भी जीवंत अवसर है। यद्यपि इस उत्सव का मूल भाव महिषासुर मर्दिनी मां दुर्गा की आसुरी शक्तियों पर विजय का उत्सव मनाना है, लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में इसे मनाने की शैलियां, परंपराएं और सांस्कृतिक रंग पूरी तरह भिन्न हैं।

बंगाल में दिखता है परंपरा-संस्कृति का संगम

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा का रूप सबसे अधिक व्यापक, भव्य और पारंपरिक होता है। यहां यह उत्सव केवल पांच दिनों का नहीं, बल्कि पूरे साल की तैयारी का परिणाम होता है। पारंपरिक बंगाली घरों और पुराने अभिजात्य परिवारों (राजबाड़ी की पूजा) में आज भी मां दुर्गा की 'एकचाला' (एक ही अर्द्धवृत्त फ्रेम में सभी देवताओं की मूर्तियां) प्रतिमा स्थापित की जाती है। कोलकाता और अन्य शहरों में समकालीन कला, सामाजिक संदेशों या प्राचीन मंदिरों की प्रतिकृतियों पर आधारित विशाल पंडाल बनाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। महाष्टमी के दिन नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी विशेष पूजा की जाती है, जो नारी शक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। धुनुची (धूप और नारियल के छिलकों से सुलगता पात्र) के साथ किया जाने वाला ऊर्जावान धुनुची नृत्य यहां का मुख्य आकर्षण है। वहीं, विजया दशमी के दिन विवाहित महिलाएं मां को सिंदूर अर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर लगाकर सुखद भविष्य की कामना करती हैं।


महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान 'भोंडाला' खेलती महिलाएं

ओडिशा-असम में शक्तिपीठों की आराधना

पूर्वी भारत के राज्यों ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा का अपना ही विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप देखने को मिलता है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के दौरान मां की मूर्तियों के पीछे शुद्ध चांदी के कलात्मक मुकुट और झांकियां बनाई जाती हैं, जिन्हें 'चांदी मेधा' कहा जाता है। यहां का विसर्जन जुलूस अपनी भव्यता और संगीत आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। जबकि असम में कामाख्या मंदिर और शक्तिपीठों के प्रभाव के कारण यहां मां दुर्गा की पूजा तांत्रिक और पारंपरिक विधि-विधान से की जाती है। यहां 'अंजली' और 'महाप्रसाद' वितरण का विशेष महत्व होता है।

गुजरात में होता है आयोजित गरबा-डांडिया का महाउत्सव

गुजरात में नवरात्रों में मां अंबा और मां दुर्गा की आराधना नृत्य और संगीत के माध्यम से की जाती है। नवरात्रों में युवक-युवतियां पारंपरिक परिधानों में सजकर मां की ज्योत (गरबी) के चारों ओर तालियों और लोकगीतों के साथ गरबा और डांडिया खेलते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप का सबसे बड़ा मंच बन जाता है, जहां युवा से लेकर बुजुर्ग तक पूरी ऊर्जा के साथ शामिल होते हैं।

महाराष्ट्र में होती है घटस्थापना और शस्त्र पूजा

महाराष्ट्र में नवरात्र और विजया दशमी का पर्व लोकमान्य तिलक द्वारा पुनर्जीवित सार्वजनिक गणेशोत्सव की तरह ही सामाजिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। अश्विन प्रतिपदा के दिन घरों में कलश स्थापना (घटस्थापना) और नौ दिनों तक अखंड दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। महाराष्ट्र में महिलाओं और विशेषकर युवतियों के लिए 'भोंडला' या 'हदस्तोत्सव' खेलने की अनूठी परंपरा है, जिसमें हाथी के चारों ओर घेरा बनाकर लोकगीत गाए जाते हैं। विजया दशमी के दिन यहां शमी के पत्तों (जिसे स्वर्ण माना जाता है) को एक-दूसरे को देकर शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर औजारों तथा हथियारों की पूजा भी की जाती है।

दक्षिण भारत की शान है बोम्माइ गोलू और शाही दशहरा

दक्षिण भारत (विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश) में दुर्गा पूजा का स्वरूप कला और शाही इतिहास से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु और कर्नाटक में नवरात्र के दौरान घरों में सीढ़ीनुमा रैक बनाकर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और जीवन से जुड़ी गुड़ियों (बोम्माइ) को सजाया जाता है। इसे 'गोलू' कहा जाता है' जहां महिलाएं एक-दूसरे के घर जाकर हल्दी-कुमकुम और उपहार का आदान-प्रदान करती हैं। मैसूर पैलेस में मनाया जाने वाला दशहरा पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां विजया दशमी के दिन सजे-धजे हाथियों की सवारी निकाली जाती है, जिसमें मां चामुंडेश्वरी की स्वर्ण प्रतिमा को हाथी पर विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला जाता है।


दक्षिण भारत में नवरात्र के दौरान बोम्माइ गोलू की सजावट

उत्तर भारत में रामलीलाओं की धूम

उत्तरी भारत में नवरात्रों का समापन रावण दहन और रामलीला के साथ विजया दशमी के रूप में मुख्य रूप से होता है। विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में इस दौरान जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का क्रेज आज भी है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू घाटी में मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव बेहद अनूठा है। यहां सात दिनों तक स्थानीय देवी-देवताओं की पालकियों की भव्य रथ यात्रा निकलती है। यह उत्सव तब शुरू होता है, जब देश के बाकी हिस्सों में दशहरा समाप्त हो जाता है। यहां मां दुर्गा के साथ भगवान रघुनाथ की पूजा का मुख्य विधान है। *

सृष्टि का मूल आधार है 'शक्ति'। शक्ति की यह आराधना केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन और वैश्विक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मातृ शक्ति को नाम-तरीकों से पूजा जाता रहा है।

दुनिया भर में शक्ति पूजा
स्वरूप-मान्यताएं हैं अलग-अलग

आस्था / अंजू जैन



भारतीय उपमहाद्वीप को शक्ति पूजा का वैश्विक उद्गम केंद्र माना जा सकता है। यहां 'शाक्त संप्रदाय' के अंतर्गत शक्ति को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजा जाता है। भारत में मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूपों में शक्ति का त्रिविध स्वरूप आकर्षण, ऐश्वर्य और ज्ञान पूजनीय है। वर्ष में दो बार आने वाले 'नवरात्रि' के पावन अवसर पर नौ दिनों तक आदिशक्ति के नौ अलग-अलग रूपों (शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक) की पूजा की जाती है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में फैले 51 शक्तिपीठ शक्ति पूजा के भौगोलिक और आध्यात्मिक विस्तार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। शक्ति पूजा की व्यापकता पूरी दुनिया में प्राचीन काल से आज भी विद्यमान है।

प्राचीन मिस्र में 'आइसिस' और 'सेखमेट' की आराधना: यदि हम प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं की ओर रुख करें, तो नील नदी की घाटी (मिस्र) में


मिस्र सभ्यता की देवी 'आइसिस'

शक्ति पूजा का एक बेहद समृद्ध इतिहास मिलता है। मिस्र की सभ्यता में देवी 'आइसिस' को मातृत्व, जादू और जीवन के पुनर्जन्म की परम देवी माना जाता था, जिसकी तुलना भारतीय संस्कृति की मां पार्वती से की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, युद्ध और विनाश की उग्र देवी 'सेखमेट' का स्वरूप भारतीय परंपरा की मां काली से हूबहू मेल खाता है। सिंह के मुख वाली देवी सेखमेट को न्याय और संहार की शक्ति माना जाता था, जो बुरी ताकतों से ब्रह्मांड की रक्षा करती थीं।

ग्रीक (यूनानी) सभ्यता में देवियों का महातम्य: यूनान के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं में भी स्त्री शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवी 'अथेना' को बुद्धि, ज्ञान और युद्ध की रणनीति की देवी माना गया है, जो मां सरस्वती और मां दुर्गा के मिले-जुले स्वरूप को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, प्रकृति, जंगली जीवों और प्रसव की देवी 'आर्टेमिस' और पृथ्वी माता के रूप में पूजी जाने वाली देवी 'डेमेटर' (जिन्हें हम मां शाकंभरी या अन्नपूर्णा कह सकते हैं) की पूजा यूनानी समाज में अनिवार्य रूप से की जाती थी। ओलंपिक खेलों की शुरुआत भी कहीं न कहीं इन शक्तियों के सम्मान से जुड़ी थी।

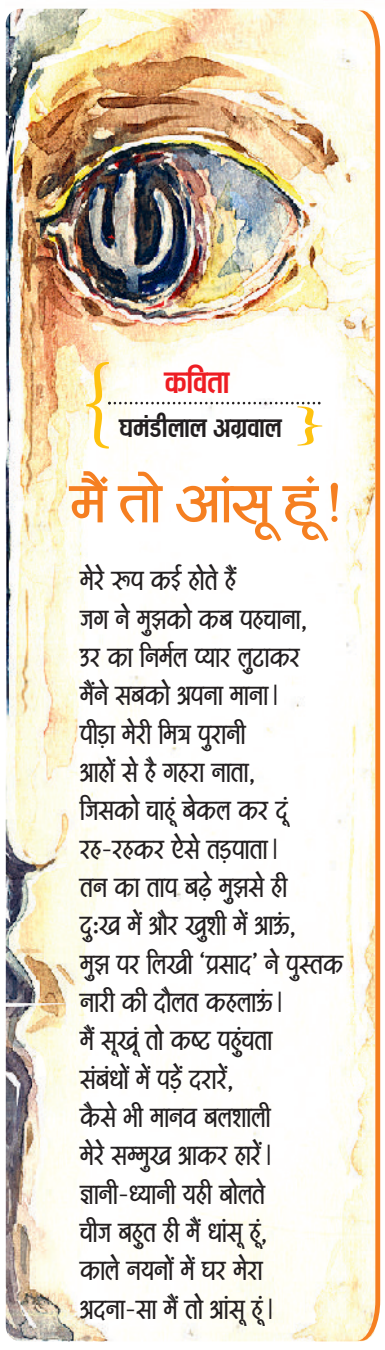
मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रेम-युद्ध की देवी इश्तार: दजला और फरात नदियों के किनारे विकसित हुई मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) की प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियन सभ्यताओं में देवी 'इन्नाना' या 'इश्तार' की पूजा का व्यापक प्रचलन था। इश्तार को प्रेम, सौंदर्य, उर्वरता के साथ-साथ युद्ध की भी देवी माना जाता था। शेर की सवारी करने वाली देवी इश्तार का यह हिंसक और ममतामयी दोहरा स्वरूप बिल्कुल भारतीय सिंहवाहिनी मां दुर्गा जैसा ही है। यह इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर में भी शक्ति को एक योद्धा और रक्षक के रूप में ही देखा गया।

चीन-जापान में गुआन यिन और अमातेरासु: पूर्वी एशिया की बौद्ध और शिंतो परंपराओं में भी शक्ति पूजा ने अपना स्वरूप बदला लेकिन अपनी मूल भावना को बनाए रखा। चीन में 'गुआन यिन' को करुणा, दया और मातृत्व की देवी के रूप में पूजा जाता है। यद्यपि वे बौद्ध परंपरा से जुड़ी हैं, लेकिन आम जनमानस में उनका स्थान एक रक्षक माता का ही है। वहीं जापान की पारंपरिक शिंतो संस्कृति में


चीन में बौद्ध परंपरा की देवी गुआन यिन

'अमातेरासु' को सूर्य की देवी और संपूर्ण ब्रह्मांड की निर्मात्री माना गया है। जापानी शाही राजवंश स्वयं को सूर्य देवी अमातेरासु का वंशज मानता है, जो यह साबित करता है कि वहां राजसत्ता की शक्ति का स्रोत भी एक महिला देवी ही हैं।

अमेरिका में माया और एज्टेक की प्रकृति पूजा: कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से बहुत पहले, वहां की समृद्ध माया और एज्टेक सभ्यताओं में प्रकृति को ही शक्ति का जीवंत रूप मानकर पूजा जाता था। एज्टेक सभ्यता में 'कोटलीक्यू' को जीवन और मृत्यु की देवी, यानी 'धरती माता' के रूप में पूजा जाता था। उनका स्वरूप भी स्कंदमाता और काली के समान उग्र और सृजनात्मक था। वहीं माया सभ्यता में 'इशचेल' को चंद्रमा, चिकित्सा और बुनाई की देवी माना जाता था। इन संस्कृतियों में फसल कटाई के समय मातृ शक्ति को धन्यवाद देने के लिए बड़े उत्सव मनाए जाते थे, जो हमारे यहां की 'नवान्न' या 'लोहड़ी', 'पोंगल' परंपरा जैसी ही है। *



कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मैं तो आंसू हूं!

मेरे रूप कई होते हैं
जग ने मुझको कब पहचाना,
उर का निर्मल प्यार लुटाकर
मैंने सबको अपना माना।
पीड़ा मेरी मित्र पुरानी
आहों से है गहरा नाता,
जिसको चाहूं बेकल कर दूं
रह-रहकर ऐसे तड़पाता।
तन का ताप बढ़े मुझसे ही
दुःख में और खुशी में आऊं,
मुझ पर लिखी 'प्रसाद' ने पुस्तक
नारी की दौलत कहलाऊं।
मैं सूखूं तो कष्ट पहुंचता
संबंधों में पड़ें दरारें,
कैसे भी मानव बलशाली
मेरे सम्मुख आकर हारें।
ज्ञानी-ध्यानी यही बोलते
चीज बहुत ही मैं धांसू हूं,
काले नयनों में घर मेरा
अदना-सा मैं तो आंसू हूं।

व्यंग्य / डॉ. यशोधरा भटनागर

दोस्ती का डेटा पैक



हम बड़े भाग्यशाली समय में जी रहे हैं, जब हमारे पास दोस्तों की कोई कमी नहीं हैं। हमारे इतने दोस्त हैं कि हम खुद भूल जाते हैं कि आखिर हम किसके दोस्त हैं और कौन हमारा? भाग्यशाली समय की हर सुबह अपने दोस्तों से मिलने के साथ शुरुआत होती है और वो भी घर बैठे। मोबाइल उठाया अंगुली से स्क्रीन पर हल्का-सा स्पर्श किया, दोस्ती की दुनिया खुल जाती है। हजारों दोस्त एक साथ कतार में खड़े मिलते हैं। अब पुराने जमाने की तरह चाय पिलाने, हाल-चाल पूछने, या दुःख-सुख बांटने की कोई झंझट नहीं। यहां सब काम लाइक और इमोजी से चल जाता है।

पहले दोस्ती का मतलब था, आप बीमार पड़ें तो कोई दवा ला दे। अब दोस्ती का मतलब है, आप बीमार पड़ें तो सौ लोग लिख दें 'गेट वेल सून।' लिखने वाला इस परम विश्वास से संदेश भेजता है कि यह वाक्य दवा और दुआ से भी ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करेगा। लिखने वाले भी निश्चिंत हो जाते हैं कि उसने दोस्ती का फर्ज अदा किया। मोबाइल में इतने 'गेट वेल' बरसते हैं कि बीमारी भी ठिठककर सोचती है। यहां दर्द असली है, या महज रस्म अदायगी है?

अब यह नई संवेदना है, जिसमें आदमी घर से नहीं निकलता, पर भावनाएं पूरी तरह आउटसोर्स कर देता है। भावनाएं डाक से नहीं, डेटा से जाती हैं और कभी-कभी 'डिलीवर' भी नहीं होतीं। इतनी फर्ज अदायगी के बाद अगर मरीज स्वस्थ हो जाए तो ठीक, नहीं तो अगली पोस्ट 'ओम शांति' की तैयारी है। सोशल मीडिया ने दोस्ती को बहुत लोकतांत्रिक बना दिया है। अब आप किसी को जानते हों या न जानते हों, दोस्ती हो सकती है। मेरे एक परिचित हैं, जो हर सुबह कई सौ लोगों को 'गुड मॉर्निंग' भेजते हैं। मैंने पूछा, 'भैया क्या आप इन सबको जानते हैं?' वे बोले, 'नहीं, पर ये सब मेरे फ्रेंड्स हैं।' मैंने सोचा, अगर यही दोस्ती है तो मोहल्ले का किराना दुकानदार मेरा आत्मीय मित्र हुआ। कम से कम वह हर महीने उधार का हिसाब पूछते समय मेरा चेहरा तो पहचान लेता है। इन ऑनलाइन दोस्तों की तरह सिर्फ डी.पी. वाला चेहरा ही नहीं पहचानता। अब आदमी के जीवन में दोस्ती का नए पैमाने, नए मापदंड बन गए हैं-लाइक्स। जिसकी पोस्ट पर ज्यादा लाइक, वह ज्यादा लोकप्रिय। लोग फोटो डालते हैं। कभी कॉफी के कप के साथ, कभी जिम में पसीना बहाते हुए, कभी पहाड़ों में मुस्कुराते हुए और नीचे सैकड़ों लोग लिख देते हैं। 'वाह!' या फिर 'कमाल है!'

हमें तो कभी-कभी लगता है कि अगर न्यूटन आज होते तो वे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत नहीं खोजते, बल्कि यह खोजते कि पोस्ट पर लाइक किस तरह और किस गति से गिरते हैं? ऑनलाइन दोस्ती की एक और खूबी है। यहां हर आदमी बहुत खुश दिखाई देता है। कोई लिख रहा है, 'लाइफ इज ब्यूटीफुल।' कोई लिख रहा है, 'फीलिंग ब्लेस्ड।' जबकि उसी आदमी की असली जिंदगी में बिजली का बिल, बच्चों की फीस और बॉस की डांट उसकी प्रतीक्षा कर रही होती है। पर इन सब चिंताओं के बीच फुर्सत पाते ही वह एक नई फोटो डाल देता है, मानो हर समस्या हल हो गई। एक दिन हमने अपने मोहल्ले के गुड्डू से यूं ही पूछ लिया, 'भैया तुम्हारे कितने दोस्त हैं?'

'पूरे चार हजार आठ सौ। पांच हजार में दो सौ कम।' उसने बड़े गर्व के साथ मुस्कुराते हुए जवाब दिया। हमने कहा, 'अच्छा है, फिर तो तुम्हें कभी अकेलापन नहीं लगता होगा।''नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं। अकेलापन अपनी जगह है। रात को मोबाइल बंद होता है, तो दोस्ती भी 'स्लीप मोड' में चली जाती है। छत की ओर एकटक देखते हुए सोचता हूं, 'इतने सारे दोस्त हैं, पर बात किससे करूं?' उसकी बात सुनकर हम सोचने लगे। इतने दोस्तों के होते हुए भी अकेलापन?' क्योंकि दोस्ती में अब मेहनत नहीं है। मित्रों, दोस्ती का नया ज्ञान और विज्ञान यह है कि डिजिटल की दोस्ती भी बड़ी प्रगतिशील हो गई है। न इंतजार है, न रूठना है, न मनाना है। बस अंगूठा चलाना है। और दोस्त पसंद न आए तो ब्लॉक कर अंगूठा दिखाना है। संवेदनाएं शब्दों की मोहताज हो गईं हैं और भावनाओं ने इमोजी की शक्ल अख्तियार कर ली है। *

लघुकथा / सूर्यदीप कुशवाहा

कच्ची दीवार

अनन्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसकी कार्यक्षमता, अनुशासन और टीम के नेतृत्व करने की काबिलियत का हर कोई कायल था। इस वर्ष ऑपरेशंस हेड का पद खाली होने वाला था और अनन्या अपनी योग्यता के आधार पर इसकी सबसे प्रबल दावेदार थी। उसी विभाग में राहुल भी मैनेजर था। राहुल काम में औसत था, लेकिन उसकी नेटवर्किंग और ऑफिस के पुरुष सहयोगियों के साथ शाम की पार्टियों में उपस्थिति उसे मैनेजमेंट की नजरों में बनाए रखती थी।

पदोन्नति के इंटरव्यू का दिन आया। अनन्या ने पिछले तीन वर्षों के अपने शानदार रिकॉर्ड, कंपनी के बढ़ते हुए प्रॉफिट और टीम की सफलता का पूरा डेटा प्रस्तुत किया। दूसरी ओर, राहुल का प्रस्तुतीकरण सामान्य था। इंटरव्यू बोर्ड के मुख्य सदस्य मिस्टर खन्ना ने अनन्या से एक ऐसा सवाल पूछा, जो शायद ही किसी पुरुष उम्मीदवार से पूछा जाता। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अनन्या, आपका काम तो बेहतरीन है, लेकिन पता चला है कि आप फैमिली प्लानिंग के बारे में सोच रही हैं। यह पोस्ट तो बहुत जिम्मेदारी वाला है, ऐसे में क्या आप फैमिली के साथ ऑफिस की नई जिम्मेदारियां संभाल पाएंगी?' यह सवाल सुनकर अनन्या सन्न रह गई। उसकी योग्यता पर उसकी व्यक्तिगत जीवन को भारी माना जा रहा था। कुछ दिनों बाद घोषणा की गई कि राहुल को ऑपरेशंस हेड बना दिया गया। कारण बताया गया कि राहुल ज्यादा फ्लेक्सिबल है और जरूरत के समय उपलब्ध रह सकता है। यह अधिकतर कार्यालयों में व्याप्त उस ग्लास सीलिंग का जीवंत उदाहरण था, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के बजाय उनकी सामाजिक भूमिकाओं के तराजू में तौला जाता है। लेकिन अनन्या ने हार नहीं मानी। उसने एचआर विभाग में निष्पक्ष समीक्षा की मांग की और अपनी परफॉर्मेंस के आंकड़ों के साथ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई।



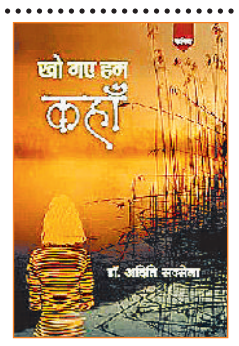
उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रतिबद्धता और काबिलियत का पैमाना जेंडर नहीं, बल्कि रिजल्ट होना चाहिए।' अनन्या के साहस ने दबे स्वर में बात कर रही अन्य महिला सहकर्मियों को भी प्रेरित किया। मामला मुख्यालय तक पहुंचा और जांच में पाया गया कि राहुल का चयन पक्षपातपूर्ण था।

अंततः प्रबंधन को अपनी गलती सुधारनी पड़ी। अनन्या को न केवल वह पद मिला, बल्कि कंपनी ने नई नीतियां लागू कीं ताकि भविष्य में किसी भी महिला की योग्यता को उसके घरेलू भविष्य के अनुमानों से न आंका जाए। अब असमानता की कच्ची दीवार टूट गई थी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी कविताएं

पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर अदिति सक्सेना के भीतर एक कवि मन भी है। इसको प्रमाणित करता है हाल में छपकर आया उनका पहला कविता संग्रह-खो गए हम कहां। इसमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ ही देश और पूरी मनुष्यता के प्रति उनकी संवेदनशीलता प्रकट होती है। इस लिहाज से 'बंटवारा' कविता को पढ़ा जा सकता है। कुछ ऐसे ही भाव 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' कविता में भी प्रकट हुए



हैं तो कवयित्री को अपने देश के जांबाज सैनिकों पर भी गर्व है। इसे उन्होंने ओजस्वी शब्दों में 'हमारे वीर वायु योद्धा' में व्यक्त किया है। इन सबके साथ पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री को किस तरह हमेशा डरे-सहमे रहने को विवश होना पड़ता है, इस त्रासदी को बहुत मार्मिकता के साथ अदिति ने 'बलात्कार' कविता में शब्दबद्ध किया है। इसी तरह संग्रह की अनेक कविताओं में जीवन और समाज की तमाम विसंगतियों, विडंबनाओं के काव्यात्मक चित्र देखे जा सकते हैं। *

पुस्तक: आ गए हम कहां (कविता संग्रह), **लेखिका:** डॉ. अदिति सक्सेना, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** भावना प्रकाशन, दिल्ली

द्वीपीय जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता

अंडमान-निकोबार का कोकोनट कार्निवल



नारियल की खुशबू, समुद्री लहरों की हरहराती आवाज और स्थानीय संस्कृति के विविध रंग, अंडमान और निकोबार द्वीप का कोकोनट कार्निवल इन सबको एक साथ समेटता है। हर वर्ष आयोजित होने वाला यह उत्सव, नारियल के बहाने इन द्वीपों के खान-पान, परंपरा, कला और संस्कृति से भी रूबरू कराता है।

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

समुद्र के बीच में बसे द्वीपों की अपनी एक अलग भाषा होती है। रास्तों के किनारे झूमते नारियल के पेड़ किसी स्वागत द्वार की तरह लगते हैं और दूर तक फैला नीला पानी यह एहसास करा देता है कि भारत की भौगोलिक कहानी सिर्फ पहाड़ों, मैदानों और रेगिस्तान तक ही सीमित नहीं है। अंडमान-निकोबार पहुंचकर नजर जब नारियल के पेड़ों पर ठहरती है, तो समझ में आता है कि यहां नारियल महज एक फल या पेड़ नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी, खानपान और स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी है। इस रिश्ते को उत्सव में बदल देता है यहां का कोकोनट कार्निवल, जो इस साल 17 से 18 अक्टूबर 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, विजय पुरम पोर्ट ब्लेयर में आयोजित होगा।

द्वीपीय जीवनशैली को करीब से देखने का मौका

अंडमान-निकोबार में हर साल अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला यह यह पारंपरिक मेला, अपना एक अलग ही चुंबकीय आकर्षण रखता है। इस मौके पर यहां आने वाले पर्यटकों को इन द्वीपों की असली जीवनशैली को करीब से देखने का मौका मिलता है। नारियल से बने खाद्य पदार्थ, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और स्थानीय स्वाद, सब मिलकर इसे सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अंडमान की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान की झलक बना देते हैं। सैलानियों के लिए किसी जगह की असली खूबसूरती उसके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों से आगे शुरू होती है। समुद्र तटों की तस्वीरें तो हर पर्यटक खींचता है, लेकिन उन समुद्र तटों के आस-पास रहने वाले लोगों का जीवन कैसा है, वे क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं और अपनी प्राकृतिक संपदा को किस तरह देखते हैं? इस सबको जानना यात्रा को एक अनोखा अनुभव बना देता है।

समझ आती है नारियल की बहुपयोगिता



यहां पहुंचकर लोगों को पता चलता है कि नारियल सिर्फ मंदिर में चढ़ाने या कुछ मिठाईयों में इस्तेमाल होने तक सीमित नहीं है। इसकी उपयोगिता की बहुत लंबी-चौड़ी लिस्ट है। इसका पानी हमारी प्यास बुझाता है। इसकी गिरी हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है। इसका तेल खान-पान से लेकर दूसरे घरेलू कामों में इस्तेमाल होता है, जबकि इसकी जटा और खोल से कई तरह के उपयोगी उत्पाद बनाए जाते हैं। द्वीपों में इसकी मौजूदगी इतनी स्वाभाविक है कि पर्यटकों को शायद पहली नजर में इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक भूमिका का अंदाजा भी न हो। कोकोनट कार्निवल इसी रोजमर्रा की चीज को उत्सव के केंद्र में लाकर इसके महत्व को उजागर करता है।

अलग-अलग तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ

इस कार्निवल की एक और खूबी है, यहां पर बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के लजीज स्वाद। अंडमान की यात्रा समुद्री भोजन के स्वाद के बिना अधूरी रहती है। स्थानीय भोजन में कई तरह के समुद्री खाद्य पदार्थों के साथ नारियल की संगति यहां देखते ही बनती है। नारियल आधारित चटनियां, करी और दूसरे स्थानीय व्यंजन यहां आने वाले पर्यटकों को उस स्वाद से परिचय कराते हैं, जो किसी होटल के सामान्य मेन्यू में नहीं मिलता। शाकाहारी यात्रियों के लिए भी यहां नारियल आधारित व्यंजनों की अपनी भरी-पूरी दुनिया है।

संस्कृति के विविध आयामों से परिचय

अंडमान-निकोबार कोकोनट कार्निवल, खान-पान के जरिए भी सैलानियों के सामने स्थानीय संस्कृति परोसता है। यहां की संस्कृति के विविध आयाम हैं, जो सदियों से रह रहे यहां के अनेक समुदायों की परंपराओं से मिलकर बनी है। स्थानीय संगीत और नृत्य, हस्तशिल्प तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़े उत्पाद, इस बात का एहसास कराते हैं कि द्वीपों की संस्कृति मुख्य भूमि से अलग होते हुए भी उसमें भारत की विविधता के चटक रंग घुले हुए हैं।

अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

इस कोकोनट कार्निवल में आया कोई पर्यटक जब स्थानीय उत्पाद खरीदता है, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेता है या स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियां देखता है, तो इससे यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचता है। इस तरह उत्सव पर्यटन को केवल होटल्स और दर्शनीय स्थलों तक सीमित रखने की बजाय उसे स्थानीय समुदायों से जोड़ देता है।

हर अनुभव होता है यादगार

सुबह समुद्र के किनारे सूर्योदय, दिन में द्वीपों की सैर और स्थानीय बाजारों की खोज तथा शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव। कोकोनट कार्निवल के समय यहां आने वाले पर्यटक अपनी आंखों में सिर्फ अंडमान-निकोबार द्वीप की खूबसूरती ही नहीं ले जाते बल्कि इस सांस्कृतिक अनुभव को भी ले जाते हैं, जो जीवन भर उनके मन में यहां की याद ताजा बनाए रखता है। कोकोनट कार्निवल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह किसी पर्यटन अनुभव की नकल करने की बजाय स्थानीय जीवन के साधारण चीज को उत्सव में बदल देता है। एक नारियल के बहाने, प्रकृति, भोजन, रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और पर्यटन, सब एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगते हैं। *

रखें इन बातों का ध्यान

किसी भी द्वीपीय पर्यटन की तरह यहां भी जिम्मेदाराना पर्यटन बहुत जरूरी है। अंडमान-निकोबार के समुद्र तट इसलिए भी लोगों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये साफ-सुथरे हैं। ऐसे में यह पर्यटकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि ये साफ-सुथरे समुद्र तट, बाकी सैलानियों के लिए भी ऐसे ही बने रहें, इसलिए प्लास्टिक कचरा न फैलाना, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी का सम्मान करना, स्थानीय समुदायों और उनकी परंपराओं की तस्वीर या वीडियो लेने से पहले अनुमति लेना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना जैसी बातों का पालन करें। भले ये छोटी बातें लगती हों, लेकिन संवेदनशील द्वीपों के लिए इनका बड़ा महत्व है।

सफल और समृद्ध जीवन की कामना हम सभी करते हैं। इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आपके व्यक्तित्व और व्यवहार में कुछ विशेष गुणों का होना जरूरी है। इस बारे में जानिए।

आपको सफल-समृद्ध बनाएंगी

व्यक्तित्व की खूबियां-आदतें

सक्सेस मंत्र
नेहा जैन



किसी ने क्या खूब कहा है, दौलत तिजोरी या बैंक खाते में आने से पहले सोच में जन्म लेती है। यानी सफल और समृद्ध होने के लिए हमारी सोच और व्यक्तित्व में कुछ आदतों का शामिल होना जरूरी है।

खुद पर भरोसा: हर बड़ी उपलब्धि की शुरुआत तालियों से नहीं होती। कई बार शुरुआत संदेह और उपहास से होती है। असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों में अपने विचार और अपनी क्षमता पर एक मजबूत विश्वास दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे हर समय सही होते हैं। बल्कि वे गलत होने की संभावना के बावजूद कोशिश करने का साहस रखते हैं। आत्मविश्वास का सही अर्थ है- 'मुझे सब कुछ नहीं आता, लेकिन मैं सीख सकता हूं।' यही सोच नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है।

भविष्य का सही अनुमान लगाने की आदत: आम लोग व्यवसाय के लिए देखते या विचार करते हैं कि आज बाजार में क्या चल रहा है? लेकिन असाधारण सोच वाला व्यक्ति सोचता है कि कुछ वर्षों बाद लोग क्या चाहेंगे? बाजार में किस उत्पाद या सेवा की मांग होगी। यही फर्क कई बार विचार और नवाचार के बीच होता है। तकनीक बदल रही हैं, लोगों की आदतें बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं- इन बदलावों को समझकर आगे की तैयारी करना दूरदृष्टि है।



आलोचना से बेपरवाह: जैसे ही आप कुछ नया करेंगे, राय देने वाले लोग मिल जाएंगे। कोई कहेगा, 'यह तुम्हारे बस का नहीं।' कोई कहेगा, 'इसमें पैसा नहीं है।' कोई आपके पुराने अनुभवों का हवाला देकर आपको रोकने की कोशिश करेगा। आलोचना से भागना नहीं चाहिए। लेकिन हर राय को दिल और दिमाग पर नहीं लेना चाहिए। इस विषय में सुलझा हुआ तरीका है सलाह सुनो, उसके तथ्य जांचो, उपयोगी बात अपनाओ और अंतिम निर्णय सोच-समझकर खुद लो।

बेहतर बनने की भूख: असाधारण लोग केवल सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते। वे अपने काम में उत्कृष्टता की तलाश करते रहते हैं। यह मानसिकता दूसरों को हराने की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है। यह सूत्र लंबे समय में असाधारण परिणाम दे सकता है।

वर्तमान सुख के बदले बड़ा लक्ष्य: मान लीजिए आपके सामने दो विकल्प हैं अभी दो घंटे मोबाइल पर मनोरंजन या वही दो घंटे किसी जरूरी कौशल को सीखने में लगाना। तुरंत मिलने वाला सुख आकर्षक होगा। लेकिन भविष्य का लाभ अकसर कम दिखाई देता है। इसीलिए आत्म-अनुशासन इतना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब जीवन से आनंद खत्म करना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना जरूरी नहीं।

पैसे की बचत जरूरी: सफल-समृद्ध लोग जानते हैं कि धन का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं है। धन को संभालना, बचाना और समझदारी से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति आय बढ़ा सकता है, लेकिन यदि उसका पूरा पैसा अनियोजित खर्च हो जाए तो आर्थिक सुरक्षा नहीं बनती। यानी पैसे को केवल उपभोग में खत्म करने के बजाय उसे भविष्य के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

जिम्मेदारी स्वीकार करना: जीवन में बहुत कुछ हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। बाजार, मौसम, दूसरे लोगों के फैसले और कई परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं। साथ ही आपको समझना चाहिए कि हर परिस्थिति में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जिस पर हमारा नियंत्रण रहता है जैसे-हमारी तैयारी, हमारा व्यवहार, हमारा अगला कदम। यही जिम्मेदारी की भावना व्यक्ति को निष्क्रिय शिकायत से सक्रिय प्रयास की ओर ले जाती है।

सीमित जोखिम लेना: सफलता की कहानियां अकसर जोखिम से जुड़ी होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सफल व्यक्ति आंख बंद करके जोखिम लेते हैं। समझदारी यह है कि जोखिम और संभावित लाभ दोनों को देखा जाए। किसी नई स्किल को सीखने में समय लग सकता है, लेकिन वह वर्षों तक उपयोगी हो सकती है। कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार, पूंजी, मांग और संभावित नुकसान समझना जरूरी है। *

हालांकि पान मूल रूप से भारतीय पौधा नहीं है। लेकिन इसकी पहचान प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक संदर्भों, पूजा-पाठ से लेकर औषधि और सामाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर इसका उपयोग किया जाता रहा है।

प्राचीन काल से बरकरार है

भारतीय संस्कृति में पान की शान

संस्कृति
शाहिद ए. चौधरी





पान के पत्ते को लेकर रामकथा में सुंदर प्रसंग का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीराम का संदेश लेकर जब हनुमानजी लंका की अशोक वाटिका में पहुंचे तो संदेश पाकर माता सीता अत्यधिक प्रसन्न हो गईं और वह इसके लिए हनुमानजी को कोई उपहार देना चाहती थीं, लेकिन उन्हें आस-पास कोई फूल नहीं मिला। तब उन्होंने पास के एक पौधे से ताजा पत्ते तोड़े और उनको आपस में गूंथकर, आशीर्वाद के साथ हनुमानजी को प्रदान किया। वह पौधा पान का था। चूंकि यह प्रेमाशीष माता सीता से उन्हें मिला था, इसलिए हनुमानजी के लिए पान के पत्ते अति प्रिय हो गए, विशेषकर इसलिए कि यह सम्मान, शुद्धता व नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान्यता है कि तभी से पूजा के दौरान जब हनुमानजी को पान के पत्ते या उनकी माला को अर्पित किया जाता है, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि इससे उन्हें माता सीता के आशीष की याद आ जाती है। इससे हनुमानजी भक्त को सुख, अच्छी सेहत के आशीर्वाद के अतिरिक्त उसके समक्ष आने वाली बाधाएं भी दूर कर देते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णन: पान, जिसे तंबुला भी कहते हैं, का उल्लेख प्राचीन संस्कृत, तमिल साहित्य और पांचवीं शताब्दी के कालिदास के लेखन में भी मिलता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में पान की तारीफ करते हुए बताया गया है कि यह पाचन में मदद करता है, श्वास में ताजगी लाता है और शरीर के दोषों को संतुलित करता है। कामसूत्र में कहा गया है कि पान चबाने से पौरुष में वृद्धि होती है। इस पृष्ठभूमि में पान का भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा बनना स्वाभाविक था और वह भी इस सीमा तक कि प्राचीन व मध्ययुग की हिंदू रियासतों (जैसे कन्नौज) में राजा के हाथों से पान हासिल करना बहुत बड़ा शाही सम्मान माना जाता था। स्वागत व विदाई में पान के पत्तों की संख्या से हैसियत मालूम होती थी- राजा को 32 पान, राजकुमार को 24 पान, ज्ञानी को 12 पान और साधारण व्यक्ति को 4 पान प्रदान किए जाते थे। औपचारिक समारोह में मेजबान दोनों हाथों से पान पेश करता था। दूसरों के सामने पान खाना और उन्हें पेश न करना अभद्रता में शुमार होता था। प्रतिद्वंदी से पान लेने के लिए मजबूर होना अपमान का घूंट पीना था। महिला द्वारा पुरुष को पान देना उसे आमंत्रित करना था।

इतिहास में मिलते हैं संदर्भ: दिलचस्प बात यह है कि पान, भारतीय पौधा नहीं है। यह इंडोनेशिया के द्वीपों व मलय प्रायद्वीप से पानी के व्यापारी जहाजों के जरिए भारत आया। कर्नाटक के बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर (जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजवंश ने कराया था) की बाहरी दीवारों पर एक महिला को पान के पत्ते लिए हुए दर्शाया गया है, जिससे मालूम होता है कि पान को भारत में सदियों पहले स्वीकृति मिली और अब कोई हिंदू समारोह इसके बिना पूर्ण नहीं होता है।

तमिल संगम कविता 2,000 वर्ष पुराने संसार को बयान करती है जो पान से परिचित थी। पातिप्पलाई कविता में पुहार के व्यस्त बाजारों का वर्णन है, जहां पान के पत्ते बेचे जाते थे। मदुरैकांची कविता में पान की खेती व बिक्री का जिक्र मिलता है, जबकि कुसुंटोकाई कविता में बताया गया है कि छाली के साथ पान पेश करना मेजबानी व प्रेम का प्रतीक माना जाता था। असम में मेहमान को सबसे पहले छालियां या सुपारी पेश की जाती थीं। भूटान में जब भी दो लोग मिलते तो 'डोमा ज्हेस' (कृपया पान व छाली लें) कहते।

मुगलकाल में पान का सेवन ललित कला के स्तर तक पहुंच गया। चांदी व सोने के पानदान कुलीन जीवन का आवश्यक अंग बन गए। यूरोपीय यात्रियों जैसे थॉमस रो ने लिखा है कि बादशाह जहांगीर के अपने पानदान से पान मिलना जबरदस्त राजनयिक सम्मान का प्रतीक था। दिल्ली व लखनऊ के नवाबी दौर में पान शेर-ओ-शायरी, संगीत व तवाइफों की तहजीब का हिस्सा बन गए। ब्रिटिशकाल में पान का कुलीन सांस्कृतिक स्टेटस कम होने लगा। ब्रिटिश प्रशासनिक व सेनेटरी दृष्टिकोण के तहत पान को 'गंदी देशज प्रथा' के रूप में देखा जाने लगा। छाली व तंबाकू युक्त पान खाने की आदत को मुंह व गले के कैंसर से जोड़ा जाने लगा। लेकिन इस 'कोलोनियल कलंक' के बावजूद पान खाने का सिलसिला जारी रहा।

बरकरार है रुतबा: आज भी रोजमर्रा के स्ट्रीट फूड के रूप में (देश के लगभग हर शहर में आपको पनवाड़ी की दुकान मिल जाएगी), खाने के बाद हाजमे के लिए और मेहमाननवाजी के तौर पर शादियों, उत्सवों व समारोह में। पहले जहां सिर्फ तीन किस्म के पान खाए जाते थे- मीठा पान (गुलकंद, तिल, नारियल आदि युक्त), सादा पान (सिर्फ कत्था, चुना व छाली सहित) व जर्दा पान (तंबाकू सहित) तो अब चॉकलेट, फ्रूट-फ्लेवर, फायर पान आदि भी आ गए हैं। *

शायरों की नजर में पान का अंदाज



'जब हम-कलाम हम से होता है पान खाकर/किस रंग से करे है बातें चबा-चबाकर।' मीर तकी मीर ने अपने इस शेर में फ्लर्ट करने के रोजमर्रा के पलों का शानदार नक्शा खींचा है, जिसमें प्रेमिका का पान खाना लालित्य व शरारत का माध्यम बन जाता है। पान चबाने से बोलना जानबूझकर धीमा, रंगीन, प्यारा व आकर्षण भरा हो जाता है। प्रेमी न सिर्फ शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जाता है बल्कि इस वजह से भी कि हर 'चबाया' हुआ वर्ण शोखी में बदल जाता है। प्रेमिका के इस अंदाज से पान खाने पर मुसहफी गुलाम हमदानी कहते हैं- 'पान खाने की अदा ये है तो इक आलम को/खून रुलाएगी मिरी जान दहन-ए-सुर्ख तिरा।' लेकिन जब प्रेमिका अपने प्रेमी को पान देती है, तो असद अली खान कलक के शब्दों में यह होता है- 'होठों में दाब कर जो गिलौरी दी यार ने/क्या दांत पीसे गैरों ने क्या-क्या चबाए होंठ।' इसी विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह से कहा है- 'लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है/कयामत है सितम है दिल फिदा है जान हाजिर है।'

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में भक्ति गीत और भजनों का क्रेज रहा है। इनमें भी मां दुर्गा को समर्पित कई गीत तो बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी उनकी लोकप्रियता बरकरार है। यहां कुछ ऐसे ही लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर नजर डाल रहे हैं, जिनमें मां दुर्गा की महिमा का वर्णन या उनकी शक्ति का आह्वान किया गया है।

मां दुर्गा की महिमा से दमकते

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीत

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश



फिल्म 'अवतार' का गीत 'चलो बुलावा आया है..'



फिल्म 'सुहाग' का गीत 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा'

धर्म का प्रतिनिधित्व करती हुई जब कोई फिल्म बनती है, तो उसे देखने के नए रिकॉर्ड बनते हैं और जब किसी फिल्म में चमत्कार होता है, तो वह उस फिल्म का हिट पक्ष बन जाता है। यूं तो लगभग हर देवी-देवता की बॉलीवुड फिल्मों में गीतों में स्तुति हुई है लेकिन उनमें से कुछ देवी-देवताओं पर अधिक गीत बनाए गए हैं। मां दुर्गा और उनके विभिन्न स्वरूपों का गुणगान, बॉलीवुड फिल्मों के गीतों में खूब किया जाता रहा है। कुछ फिल्में तो ऐसी हैं, जिनमें शामिल किए गए मां दुर्गा के एक गीत या भजन ने उस फिल्म को भरपूर लोकप्रियता प्रदान की। 'अवतार', 'आशा' और 'सुहाग' जैसी कई फिल्में इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

'अवतार' का 'चलो बुलावा आया है': फिल्म 'अवतार' वर्ष 1983 में जब आई तो इसकी कहानी ने दर्शकों के दिलों को स्पर्श कर लिया। राजेश खन्ना और शबाना आजमी ने इस फिल्म में ऐसे माता-पिता का रोल प्ले किया है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इसी में जब बच्चा अधिक बीमार होता है, तो दोनों माता वैष्णो देवी के दरबार में जाते हैं और वहां जो चमत्कार होता है, वही इस फिल्म का अहम हिस्सा बन जाता है। फिल्म में नरेंद्र चंचल, महेंद्र कपूर और आशा भोसले द्वारा गाया यह गीत 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', आज भी घरों-मंदिरों में भक्ति-भाव से खूब गाया, सुना और बजाया जाता है। यह मां दुर्गा को समर्पित सबसे लोकप्रिय भक्ति गीतों में से एक है। शारदीय नवरात्र हो या चैत्र नवरात्र माताराणी का यह फिल्मी भजन अवसर को और भी भक्तिमय बना देता है। मां और दुर्गा मां को केंद्र में रखकर बुना गया यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना अपने रिलीज के वक्त हुआ था।



फिल्म 'क्रांतिवीर' का गीत 'जय अंबे जगदंबे मां..'

'आशा' का 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए': सन 1980 में आई फिल्म 'आशा', जितेंद्र, रीना राय और रामेश्वरी के अभिनय से सजी थी। इसमें भी नरेंद्र चंचल और मोहम्मद रफी द्वारा गाया भजन 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए,' खूब लोकप्रिय हुआ। आज चाहे माता वैष्णों के द्वार पर जाने वाले भक्त हों या फिर दूसरे सिद्धपीठों में मां के दर्शन को जाते भक्त, मार्ग से लेकर मंदिर तक, हर कहीं 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए, मैं आया मैं आया शेरा वालिए..' सुनाई पड़ता है। माता रानी के भक्त इसे भक्ति भावना के प्रदर्शन के साथ-साथ अपनी धार्मिक यात्रा की थकान मिटाने के लिए भी गाते हैं।

'सुहाग' का 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम': 1979 की फिल्म 'सुहाग' जब आई तो एंग्री यंग मैन का जमाना था। अमिताभ बच्चन, शशि कपूर तथा रेखा की इस फिल्म का गीत- 'हे नाम रे, सबसे बड़ा तेरा नाम, ओ शेरोंवाली, ऊंचे डेरों वाली, बिगड़े बना दे मेरे काम।' मोहम्मद रफी तथा आशा भोसले ने इसमें जो लय दी है, वह ही इसको ऑल टाइम हिट बना गई। मंदिरों से लेकर दुर्गा पंडालों तक में इसकी मधुर आवाज से भक्त रमे रहते हैं। सही बात तो यह है कि चाहे डांडिया हो या गरबा सभी में इसको खूब बजाया जाता है।



'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत 'मां शेरा वालिए'

नवरात्र पर केंद्रित कई अन्य गीत हुए लोकप्रिय: अलग-अलग दौर में आई कई अन्य फिल्मों में भी मां दुर्गा पर केंद्रित गीत रचे गए। इन गीतों ने भी खूब लोकप्रियता बटोरी। आज भी लोगों के दिलों में इन गीतों की खास जगह है। 'हम दिल दे चुके सनम' का 'ढोली तारो ढोल बाजे, ढोल बाजे ढोल बाजे, की धाम धाम बाजे ढोल...' भी डांडिया पंडालों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना कि इस फिल्म में था। फिल्म 'क्रांति' का 'दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां' और 'क्रांतिवीर' का 'जय अंबे जगदंबे मां' भी कम प्रसिद्ध नहीं हुए। 'मर्द' में अनु मलिक तथा शब्बीर कुमार का गाया हुआ गीत 'मां शेरोंवाली' उस समय खूब चला, जब यह मूवी आई थी। 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत इसी से मिलता हुआ था 'मां शेरा वालिए, तेरा शेर आ गया।' फिल्मों से अलग हटकर देखें तो माता के जगराते में भी यही शक्ति केंद्र में रही। आज तक गैर फिल्मी जो सबसे अधिक पसंदीदा गीत बना वह है 'प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी।' इसे तो लोकगायकों ने भी गाया और फिल्मी गायक-गायिकाओं ने भी। 'अंबे तू है जगदंबे' को तो न जाने कितने गायकों ने गाया है और बॉलीवुड ने इसे कई बार दृश्य को एक नया मोड़ देने के लिए प्रयोग किया।

दर्शकों को खूब लुभाया इन गीतों ने: इस बात में संदेह नहीं कि माता दुर्गा के तमाम रूप हैं जिन्हें बॉलीवुड ने जब तब दर्शकों के सामने अलग-अलग गीतों के रूप में पेश किया। इसके लिए फिल्म की कहानी ऐसी रखी गई जिसमें एक भजननुमा गीत इसमें समाहित किया जा सके। कहानी भी ऐसी जिसे देखकर दर्शकों की आंखें नम हो जाएं। कुछ भजनों को इस तरह से तैयार किया गया कि वह डांडिया या गरबा में भी चलें और दुर्गा जागरण या सामान्य तौर पर भक्तों को भक्ति में रमा दें। कहने का सार यही है कि बॉलीवुड फिल्मों में मां शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित खूब गीत रचे गए और ऐसे गीत खूब लोकप्रिय भी हुए। *